

सितम्बर 2024

अंक : चतुर्दश



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिमज्योति



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के

अनुच्छेद 343 और 351 तथा

राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम,

केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने

उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से, अपनी प्रतिबद्धता और
प्रयासों से, प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति

जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे, अपने अधीनस्थ के

हितों का ध्यान रखते हुए, अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल

और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग,

प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के

संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और

निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिंद!



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिमज्योति



सितम्बर 2024 | अंक : चतुर्दश

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून





हिंदी दिवस 2024

के अवसर पर
माननीय गृह मंत्री जी
का संदेश



राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरु नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहारी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धारण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

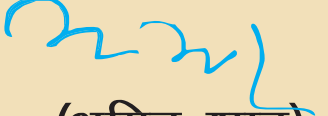
दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2024


(अमित शाह)



छायाकार : श्री प्रशान्त किमोठी, खण्डीय लेखाधिकारी-I



श्री राजीव कुमार सिंह
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड



सन्देश

हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका “हिमज्योति” का प्रकाशन पिछले 13 वर्षों से निरंतर और सफलतापूर्वक हो रहा है जो हमारे कार्यालय की रचनात्मकता और साहित्यिक प्रतिभा को उजागर करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। इस पत्रिका का प्रत्येक अंक हमारे कर्मचारियों की रचनात्मकता, समर्पण और हिंदी भाषा के प्रति उनके प्रेम का प्रमाण है। इस वर्ष भी “हिमज्योति” का “चतुर्दश” अंक प्रकाशित किया जा रहा है जो न केवल हमारे रचनाकारों की सृजनशीलता को प्रस्तुत करता है बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि कार्यालय में राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार निरंतर बढ़ता रहे।

राजभाषा पत्रिकाएँ हमारे कर्मचारियों को अपनी विचारधाराओं, भावनाओं और कल्पनाशक्ति को व्यक्त करने का एक सशक्त मंच प्रदान करती हैं। इसके माध्यम से वे न केवल अपनी भाषा में विचारों की अभिव्यक्ति करते हैं बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति अपनी निष्ठा और संकल्प को भी मजबूत करते हैं। हिंदी का प्रचार-प्रसार हमारा संवैधानिक दायित्व तो है ही साथ ही यह हमारे नैतिक कर्तव्यों में भी शामिल है। “हिमज्योति” इस दिशा में निरंतर अग्रसर रहते हुए कार्यालय में हिंदी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने और इसके आधुनिक प्रयोगों को प्रोत्साहित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

मैं इस अंक के सफल प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों, सम्पादक मण्डल, अधिकारियों और कर्मचारियों की हृदय से सराहना करता हूँ। उनकी मेहनत, समर्पण और रचनात्मकता के कारण ही “हिमज्योति” अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल हो रही है। मैं इस पत्रिका की निरंतर उन्नति और सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

राजीव कुमार

संरक्षक एवं निदेशक



छायाकार : श्री प्रशान्त किमोठी, खण्डीय लेखाधिकारी-।



श्री लोकेश दताल
उप महालेखाकार (प्रशासन)

संपादकीय

राजभाषा हिंदी के प्रचार एवं प्रसार में कार्यालयीन गृह पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान है, इसलिए सभी सरकारी कार्यालयों द्वारा हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन अनिवार्य रूप से किया जाता रहा है। आज आपकी अपनी हिंदी पत्रिका "हिमज्योति" का 14वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। जैसा कि हम सभी जानते हैं हिंदी जन-जन की भाषा है और यह देश में भाषाई एकता का भाव जागृत करती है। हममें से किसी को भी हिंदी में कार्य करने हेतु बाध्यता का बोध नहीं होना चाहिए। हिंदी तो एकमात्र ऐसी भाषा है जो अन्य भाषाओं को भी अपने में ठीक उसी प्रकार समाहित कर लेती है जिस प्रकार एक बड़ा समुद्र बड़ी-छोटी नदियों को अपने में मिला लेता है। हिंदी का हृदय और शब्दकोश बहुत बड़ा है।

"हिमज्योति" पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने के लिए सभी रचनाकारों एवं मेरे सहयोगी संपादक मंडल के प्रति मैं विशेष आभार प्रकट करता हूँ और आशा करता हूँ कि पत्रिका में छपे लेख समस्त पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, मनोरंजक एवं उत्साहवर्द्धक सिद्ध होंगे और पत्रिका आप सभी की कसौटी पर खरी उतरेगी।

आपके सुझावों और टिप्पणियों की प्रतीक्षा रहेगी।

लोकेश दताल
प्रधान संपादक





श्री तुषार कैन
उपमहालेखाकार (निधि एवं लेखा)

सन्देश

मुझे प्रसन्नता है कि कार्यालय की गौरवशाली हिंदी पत्रिका "हिमज्योति" के 14वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रसार में इस पत्रिका ने राजभाषा विभाग के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु महत्वपूर्ण सहयोग दिया है। इस कार्यालय में अधिकांश कार्य यथा—पत्राचार, टिप्पण लेखन आदि राजभाषा हिंदी में सम्पादित हो रहे हैं जो कि हर्ष का विषय है। मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित रोचक रचनाएँ पाठकों का ज्ञानवर्धन तथा मनोरंजन करेंगी। हमारी पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के सभी कार्मिकों को उनके कार्यालयीन उत्तरदायित्व के बोध के अतिरिक्त रचनात्मकता एवं लेखन कौशल की क्षमता में वृद्धि करने का एक अवसर मिलता है। सरकारी कामकाज हिंदी में करना कोई मुश्किल काम नहीं है, निरंतर प्रयास से यह कार्य अत्यंत सुगम एवं सरल हो जाता है।

मैं उन सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ जिन्होंने अपनी विशिष्ट सृजनात्मक प्रतिभा से इस अंक को सफल बनाया है। मेरी शुभकामनाएँ उनके साथ हैं। मैं संपादक मंडल को बधाई देता हूँ और पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

तुषार कैन
संपादक





सुश्री पूनम शर्मा
हिंदी अधिकारी



सन्देश

हिंदी को जन-जन की भाषा बनाने की दिशा में एक छोटा-सा कदम "हिमज्योति" हमारी अभिलाषा की मूर्त अभिव्यक्ति है। वस्तुतः लेखन एवं रचनाकर्म हमारे भीतर की कल्पना, सर्जनशीलता, धर्म और सांसारिक व्यवहार को मूर्त रूप देने में सक्षम है। हमारी हिंदी पत्रिका हिमज्योति का यह चतुर्दश अंक आप सभी सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। हिमज्योति प्रत्येक वर्ष हमारे कार्यालय के सदस्यों को वह मंच प्रदान करने का कार्य करती है जिन पर रचनाकार अपनी प्रतिभा को कविताओं, गजलों, चित्रों, लेखों, कहानियों आदि के रूप में प्रस्तुत कर पत्रिका को और अधिक रोचक बनाते हैं।

कार्यालयीन पत्रिका का यह नूतन अंक राजभाषा हिंदी की प्रगति में मील का पत्थर हो, इसी कामना के साथ मैं रचनाकारों एवं सभी उच्चाधिकारियों को धन्यवाद ज्ञापित करना चाहूँगी जो राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए सदैव तत्पर रहे हैं एवं उन्होंने इस दिशा में किये जा रहे छोटे से छोटे प्रयासों को भी सराहा है। निरंतर प्रोत्साहन प्राप्त करने के कारण ही हिंदी अनुभाग पुनः एक बार पत्रिका का एक और अंक प्रकाशित करने में सफल हो पाया है। आशा करती हूँ कि भविष्य में भी आप सभी राजभाषा हिंदी के प्रति अपने प्रेम एवं निष्ठा को ऐसे ही बनाए रखेंगे।

जय हिंद – जय हिंदी

पूनम शर्मा
हिंदी अधिकारी

हिमज्योति संपादक मण्डल



बैठे हुए (बायें से दायें) :

श्री लोकेश दताल उप महालेखाकार (प्रशासन) – प्रधान संपादक
श्री राजीव कुमार सिंह, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – संरक्षक एवं निदेशक
श्री तुषार कैन, उप महालेखाकार (निधि एवं लेखा) – संपादक

खड़े हुए (बायें से दायें) :

श्री ऋषिकेश मीना, लेखाकार – सहायक संपादक
डॉ० दिनेश शर्मा, सहायक लेखाधिकारी – सलाहकार संपादक
सुश्री पूनम शर्मा, हिंदी अधिकारी
श्री सुशील देवली, वरिष्ठ लेखाधिकारी – सलाहकार संपादक
श्री अजय कुमार पाल, सहायक लेखाधिकारी – सहायक संपादक

"पत्रिका परिवार"

संरक्षक एवं निदेशक

श्री राजीव कुमार सिंह
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड

प्रधान संपादक

श्री लोकेश दताल
उप महालेखाकार (प्रशासन)

संपादक

श्री तुषार कैन
उप महालेखाकार (निधि एवं लेखा)

सलाहकार संपादक

श्री सुशील कुमार देवली
वरिष्ठ लेखाधिकारी

डॉ० दिनेश शर्मा
सहायक लेखाधिकारी

सहायक संपादक

श्री अजय कुमार पाल
सहायक लेखाधिकारी

श्री ऋषिकेश मीना
लेखाकार

साज-सज्जा

सुश्री ज्योति रानी समादार
कनिष्ठ अनुवादक

टंकण

श्री दीपक उज्जवल
ऑकड़े प्रविष्टि संचालक

आवरण पृष्ठ

माण्डा गाँव में माछा (भोटिया) जनजाति का पारम्परिक अनुष्ठान
(छायाकार : डॉ० दिनेश शर्मा, स०ले०अ०)

पार्श्व पृष्ठ

मुनस्यारी (पिथौरागढ़) स्थित विर्था जल-प्रपात
(छायाकार : श्री प्रशान्त किमोठी, खण्डीय लेखाधिकारी-।)

अस्वीकरण : प्रकाशित रचनाओं तथा लेखों में व्यक्त रचनाकारों के विचारों से सम्पादक-मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है।



प्रतिक्रियाएँ

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित की गई हिंदी गृह पत्रिका “हिमज्योति” के त्रयोदश अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका के इस अंक में सभी लेख, रचनाएँ सरल, पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हमारे कार्यालय आईसीसा नोएडा की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय आईसीसा, नोएडा

आपके कार्यालय की राजभाषा पत्रिका “हिमज्योति” के त्रयोदश अंक की सॉफ्ट कॉपी प्राप्त हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत ही मनमोहक है। पत्रिका के इस अंक में सभी लेख, रचनाएँ सरल, पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई के पात्र है। पत्रिका के सतत प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले0 एवं हक0), बिहार, पटना

आपके द्वारा प्रेषित कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका “हिमज्योति” के 13वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिये आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले0 एवं हक0), हिमाचल प्रदेश, शिमला

आपके कार्यालय की ई-पत्रिका “हिमज्योति” की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ति हुई है। अंक पठनीय एवं उत्कृष्ट है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सराहनीय हैं, जिसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में मुख्यतः श्री बृज भूषण सेमवाल की ‘अलौकिक भु-स्वर्ग तीर्थ स्थल है-तुंगनाथ धाम’, श्री विक्रान्त कुमार की ‘बम’, श्रीमती दीपा पवार की ‘ईमानदारी से मिली सौगात’, डॉ. दिनेश शर्मा की ‘कहाँ नीती, कहाँ माणा’, श्री महिमानंद भट्ट की ‘अनुवाद में भाषायी सौंदर्य का महत्व’, सुश्री पूनम शर्मा का ‘द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन’, श्री मोहित कुमार की ‘खुश रहो और खुशियाँ बाँटें’, श्री शिवम लिल्लौरी ‘बानगी’ की ‘कविता-पहचान कवि की’ एवं श्री शिवम सिंह की ‘कहीं बिसर न जाये किताबों की महक’ तथा पत्रिका की सभी कविताएँ आकर्षण का केन्द्र बिंदु हैं। ‘हिमज्योति’ परिवार को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए ‘संवाद’ परिवार की ओर से ढेर सारी शुभकामनाएँ।

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इन्फ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी वार्षिक ई-पत्रिका “हिमज्योति” के त्रयोदश अंक की प्राप्ति हुई, पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुन्दर प्रस्तुतीकरण अत्यन्त प्रशंसनीय है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर एवं भावयुक्त हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट ‘गर्व की भाषा हिंदी’ (श्री विनोद कुमार शर्मा) और ‘ऐ-जिन्दगी’ (श्रीमती पूजा त्रिपाठी) जैसी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। पत्रिका में समाहित चित्रकारी बहुत ही मनमोहक और शिक्षाप्रद है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), राजस्थान, जयपुर

आपको कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली हिन्दी पत्रिका “हिमज्योति” की ई-प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत ही मनमोहक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ उच्चकोटि की हैं। यादों के फेर, हमारा कार्यालय, इतिहास के आईनें में, प्रकृति व बेबस इंसान, कहीं बिसर न जाये किताबों की महक आदि रचनाएँ काफी प्रशंसनीय हैं। उत्तम संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र है। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा, चण्डीगढ़

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका “हिमज्योति” के त्रयोदश अंक की प्राप्ति हुई, धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा काफी सुंदर एवं आकर्षक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ रोचक, प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएँ।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), पश्चिम बंगाल, कोलकाता

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित की गई हिन्दी गृह पत्रिका “हिमज्योति” के त्रयोदश अंक की प्राप्ति हुई, हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ लाभप्रद हैं। इस पत्रिका में हिन्दी भाषा के प्रोत्साहन हेतु सारी रचनाएँ बेहद ही जीवंत तरीके से प्रस्तुत की गई हैं। शिवम सिंह जी द्वारा रचित ‘कहीं बिसर न जाए किताबों की महक’ एवं श्री विनोद कुमार शर्मा जी द्वारा रचित कविता ‘गर्व की भाषा हिन्दी’ अत्यंत सराहनीय हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को सहस्त्र बधाई।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), केरल, तिरुवंतपुरम

आपके कार्यालय की ई-पत्रिका “हिमज्योति” के त्रयोदश अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री महिमानंद भट्ट का लेख ‘अनुवाद में भाषाई सौन्दर्य का महत्व’, श्री बृज भूषण सेमवाल का लेख ‘क्रोंच पर्वत पर विराजमान है, कार्तिक स्वामी’, श्री शिवम लिल्लहौरी ‘बानगी’ की ‘कविता पहचान कवि की’ एवं श्री शिवम सिंह की ‘कहीं बिसर न जाये किताबों की महक’ बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं। इसके अतिरिक्त श्री विनोद कुमार शर्मा की कविता ‘गर्व की भाषा हिन्दी’, श्री प्रशान्त जोशी की कविता ‘जिन्दगी दो मिनट’ एवं श्री विक्रान्त कुमार की कविता ‘हर-हर महादेव’ पठनीय हैं। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), हरियाणा, चण्डीगढ़

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली हिन्दी गृह पत्रिका “हिमज्योति” के त्रयोदश अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं उच्च कोटि की हैं। सुश्री दीपा पवार की रचना ‘ईमानदारी से मिली सौगात’ श्री विनोद कुमार शर्मा की रचना ‘मातृभाषा का सम्मान’, श्री महिमानंद भट्ट की रचना ‘अनुवाद में भाषायी सौन्दर्य का महत्व’ एवं श्री शिवम लिल्लहौरी की ‘बानगी’ की ‘कविता पहचान कवि की’ विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), ओडिसा, भुवनेश्वर

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका “हिमज्योति” के त्रयोदश अंक की प्राप्ति हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का ई-मुद्रण अति आकर्षक है। पत्रिका की रचनाओं का संकलन अत्यंत ही उत्कृष्ट कोटि का है। एक ही पत्रिका में इतने सारे विषयों को समाहित करना ‘गागर में सागर’ भरने जैसा है। पत्रिका की रचनाएँ अद्वितीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका की विषयवस्तु उत्कृष्ट कोटि की है एवं इसमें दर्शाई गयी कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका को और मनमोहक बनाते हैं। पत्रिका के संपादन एवं संकलन हेतु सम्पादक मण्डल को साधुवाद तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), ओडिसा, भुवनेश्वर

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका “हिमज्योति” का त्रयोदश अंक प्राप्त हुआ। सादर धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है। मुखपृष्ठ अत्यंत मनोरम है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएँ उच्च स्तर की एवं प्रशंसनीय हैं। एक ही पत्रिका में इतने सारे विषयों को बखूबी समाहित किया गया है। समस्त रचनाएँ एक से बढ़कर एक हैं। विशेषकर नियंत्रक और महालेखापरीक्षक की स्थिति एवं भविष्य, हमारा कार्यालय इतिहास के आईने में, मातृभाषा का सम्मान, अनुवाद में भाषायी सौंदर्य का महत्व, हिंदी को जीवन में अनिवार्य स्थान देने की आवश्यकता एवं गर्व की भाषा हिंदी पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं सराहनीय हैं। इसके अतिरिक्त ईमानदारी से मिली सौगात, कहाँ नीति, कहाँ माणा, प्रकृति व बेबस इंसान, कहीं बिसर न जाये किताबों की महक भी प्रशंसनीय हैं। बच्चों द्वारा प्रस्तुत चित्रांकन अत्यंत आकर्षक एवं मनमोहक हैं। समस्त रचनाकारों की प्रस्तुतियाँ सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, प्रयागराज, उ०प्र०

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका “हिमज्योति” के त्रयोदश अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सादर धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा सुंदर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी सुंदर हैं। पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादक मंडल ने पूर्ण प्रयास किए हैं। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाओं में रचनात्मकता की झलक स्पष्ट दिखाई पड़ती है। कविता की श्रेणी में विनोद कुमार शर्मा कृत ‘मातृभाषा का सम्मान’ एवं ‘गर्व की भाषा हिंदी, श्री प्रशांत जोशी कृत ‘प्रकृति व बेबस इंसान’ एवं लेख की श्रेणी में श्री शिवम सिंह कृत ‘कहीं बिसर न जाये किताबों की महक’, सुश्री दीपा पवार कृत ‘ईमानदारी से मिली सौगात’ रचनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), पश्चिम बंगाल

अनुक्रमिका

विधा	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ
लेख	अंग्रेजी का मोह हिंदी के विकास में बाधक	विनोद कुमार शर्मा	22–23
लेख	बाघ है तो जंगल है...	डॉ० दिनेश शर्मा	24–25
लेख	जीवन अनमोल	पूजा त्रिपाठी	26
कविता	हरेला	प्रतिभा	27
कविता	मेरा परिवार	नव्या त्रिपाठी	28
लेख	राजभाषा संबंधी ई-टूल्स	ज्योति रानी समाद्वार	29–30
कथा	थैंक्यू अंकल जी !!	प्रशान्त कुमार	31–32
कविता	खाट हूँ मैं	शिवम् लिह्लौरी	33
कविता	माँ	राजेश अधिकारी	34
कविता	अभयदान	विक्रान्त कुमार	35
यात्रा वृत्तांत	हरिद्वार के दर्शनीय स्थल	बृज भूषण सेमवाल	36–37
कविता	सपने	विनोद कुमार शर्मा	38
कविता	सखी	शिवम् लिह्लौरी	39
लेख	जीवन	विक्रान्त कुमार	40
कथा	विश्वास की मुस्कान	संजीव जखमोला	41–42
कविता	नज्म	सुशील कुमार देवली	43

विधा	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ
कविता	सोचता हूँ	राजेश अधिकारी	44
कविता	मकड़जाल	डॉ० दिनेश शर्मा	45
लेख	हिन्दी का इतिहास एवं वर्तमान परिदृश्य	अरविन्द सिंह रावत	46–47
कविता	तन्हा	प्रशान्त जोशी	48
कविता	पानी की बूँद-सी	पूजा त्रिपाठी	49
कविता	आशियाना	संजीव जखमोला	50
कविता	गजल.....	सुशील कुमार देवली	51
लेख	पाप से मुक्त करा देती है माँ गंगा	बृज भूषण सेमवाल	52
कविता	करम	प्रशान्त जोशी	53
कविता	आज कुछ ऐसा करो...	शिवम् सिंह	54
संस्मरण	वो घर जो पीछे छूट गया	प्रभात कुमार द्विवेदी	55
लेख	फूल.....	विक्रान्त कुमार	56
संस्मरण	मिटु	पूनम शर्मा	57–59
किस्सागोई	गुटरगूँ	शिवम् लिल्हौरी	60–63
संस्मरण	बनारसिया गंगा	शिवम् सिंह	64–65
कविता	नज्म	सुशील कुमार देवली	66

अंग्रेजी का मोह हिंदी के विकास में बाधक

विनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)



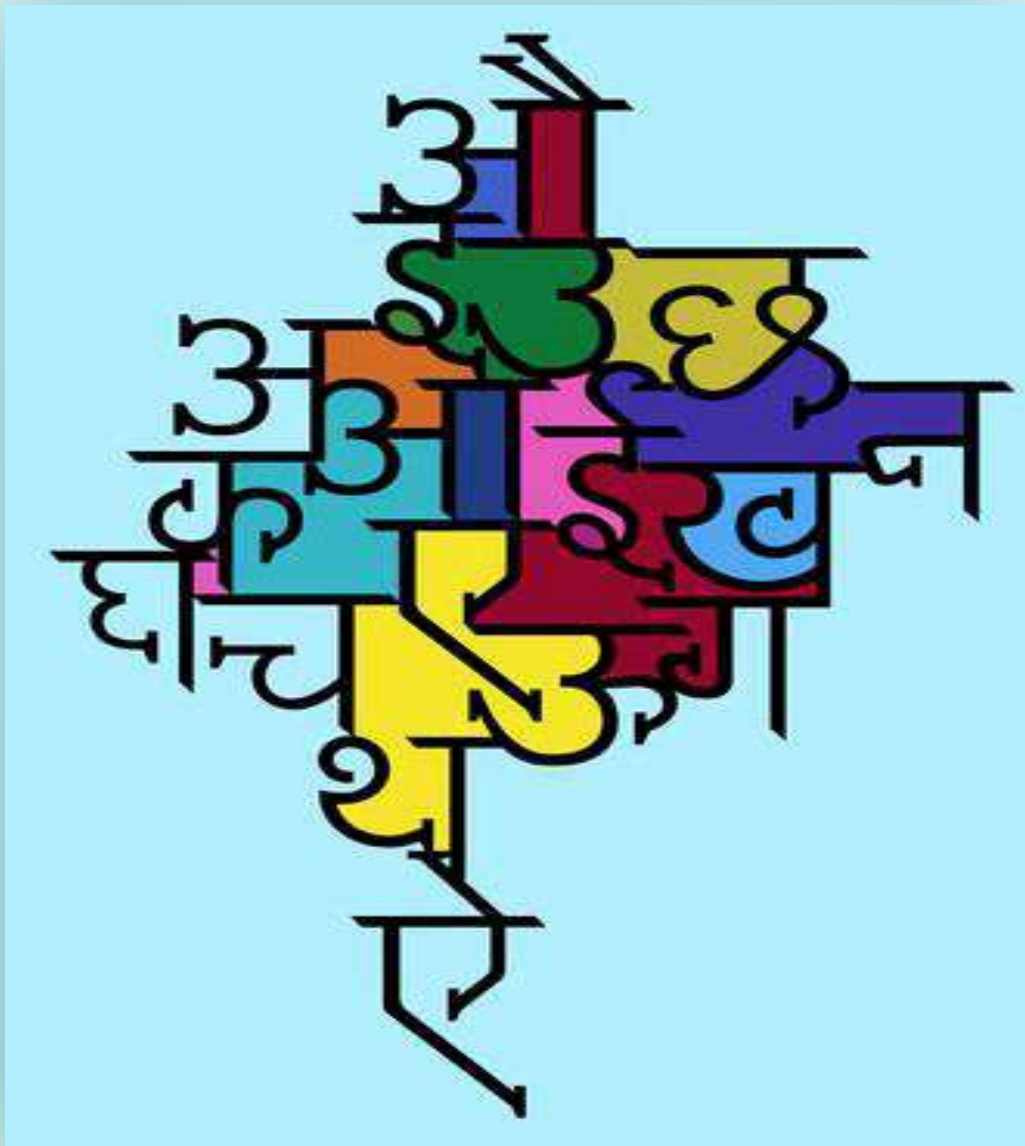
हमारे देश में प्रारम्भ से ही उच्च शिक्षा एवं शोध कार्य में अंग्रेजी भाषा पर निर्भरता अधिक रही है। यह निर्विवाद रूप से स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि अंग्रेजी को वरीयता मिलने के कारण ही हिंदी राजभाषा को आज तक वह सम्मानजनक स्थान प्राप्त नहीं हो पाया है जिसकी वह वास्तव में हकदार है। साथ ही अंग्रेजी को वरीयता मिलने के कारण समाज में एक भाषाई वर्ग विभेद तथा एक अलग अभिजात्य वर्ग भी उत्पन्न हुआ है। समाज के एक वर्ग विशेष ने अंग्रेजी के ज्ञान को ही विद्वता का पर्याय मानने का भ्रम अपने मन में पाल लिया है। उक्त वर्ग विशेष का ऐसा मानना है कि अगर ज्ञान को अंग्रेजी में अभिव्यक्त किया जाये तो वह ज्यादा महत्वपूर्ण एवं प्रभावी होता है। इस औपनिवेशिक मानसिकता से ग्रसित समाज के उच्च शिक्षित माने जाने वाले व्यक्तियों के कारण आज तक हिंदी को अपेक्षित विस्तार नहीं मिल पाया है। आज भी हमारे समाज में ऐसे व्यक्तियों का अभाव नहीं है जो हिंदी बोलने तथा लिखने वालों को अंग्रेजी बोलने तथा लिखने वालों की तुलना में कमतर आँकते हैं। यदि देखा जाये तो वर्तमान में समाज का एक वर्ग विशेष अपनी आर्थिक संपन्नता के चलते भी हिंदी को कमतर आँकने एवं त्यागने पर आमादा प्रतीत होता है। इस मानसिकता से देश के कतिपय निजी शिक्षण संस्थान तथा अभिभावकों का एक बड़ा वर्ग, जिन पर आने वाली पीढ़ी का भविष्य बनाने का दायित्व है, भी ग्रसित प्रतीत होते हैं।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार तथा निज भाषा को और अधिक समृद्ध एवं मजबूत बनाने के लिए हमें सर्वप्रथम अंग्रेजी का मोह त्यागकर दृढ़ इच्छाशक्ति की दरकार है। किसी को भी हिंदी में बोलने या लिखने में हिचकने या स्वयं को कमतर आँकने की आवश्यकता नहीं है। हिंदी स्वाभिमान की भाषा होने के साथ ही साथ हमारे देश के जन-जन को जोड़ने की भाषा है। आमजन तक राष्ट्रीय एकता का संदेश पहुँचाने तथा पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा भी हिंदी ही है। अतः हमें अपनी भाषा पर भरोसा होना चाहिए। यह ठीक है कि हिंदी के साथ ही साथ अंग्रेजी भाषा का भी ज्ञान होना प्रतिभा हो सकती है लेकिन यह अपरिहार्य नहीं। आज हिंदी का प्रचार-प्रसार सर्वत्र हो रहा है। भारतीय बाजार भी हिंदी एवं भारतीय भाषाओं में निरंतर विस्तार पा रहा है। आज हिंदी के ज्ञान के बिना किसी भी व्यवसायी के लिए भारतीय बाजार में अपने आप को स्थापित करना कठिन ही नहीं अपितु असंभव है।

हमें हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने का संकल्प लेने के साथ ही साथ हिंदी को और अधिक लोकप्रिय बनाने हेतु हर संभव प्रयास करने की आवश्यकता है। सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को अधिक से अधिक बढ़ावा देने हेतु तथा इस संदेश को निम्न स्तर तक के कार्मिकों तक पहुँचाने के लिए शीर्ष स्तर के अधिकारियों के द्वारा भी संभव प्रयास किये जाने की आवश्यकता है। इससे न केवल कार्मिकों का उत्साहवर्धन होगा अपितु उन्हें हिंदी में और अधिक उत्साह के साथ कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

हिंदी में कार्य करने के संदेश को जमीनी स्तर तक पहुँचाने के लिए हमें सर्वप्रथम अंग्रेजी के प्रति मोह को त्यागने की आवश्यकता है। जब तक हम अंग्रेजी का मोह त्यागकर तथा हिंदी को खुले दिल से अपनाकर गौरव की अनुभूति नहीं करेंगे, तब तक देश एवं समाज में हिंदी को पूरी तरह स्थापित करने के मार्ग में कठिनाईयाँ आती रहेंगी।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम अंग्रेजी का मोह त्यागें तथा अपना सभी सरकारी कामकाज हिंदी में करने का संकल्प लें। अंग्रेजी के प्रति मोह हिंदी के विकास में बाधक है। हिंदी सरल है, सुगम है तथा इसे सीखना भी आसान है, केवल हमारे अंदर दृढ़ इच्छाशक्ति का कहीं न कहीं अभाव अवश्य है। संभवतः इसी कारण से हिंदी आज तक पूरी तरह स्थापित होकर अपना सम्मानजनक स्थान प्राप्त नहीं कर सकी है।



बाघ है तो जंगल है....

डॉ० दिनेश शर्मा
सहायक लेखाधिकारी



29 जुलाई – आज अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस है और संयोग से आज मैं चम्पावत में हूँ। हिमालयी राज्य काली कुमाऊँ स्थित “मन्दिरों के नगर” चम्पावत का बाघों से पुराना नाता रहा है। चम्पावत कस्बे से बाघ के प्रगाढ़ सम्बन्ध का इससे बड़ा प्रमाण क्या होगा कि अब तक संसार में सबसे अधिक मनुष्यों के प्राण हरने का श्रेय जिस एक जानवर को जाता है, उसे दुनिया “चम्पावत टाइगर” के नाम से जानती है। चम्पावत टाइगर, जो असल में बाघ नहीं एक बाघिन थी, की कहानी वन्यजीव उत्साहियों और प्रकृति प्रेमियों को न केवल रहस्य और रोमांच से भरी बल्कि लोमहर्षक जान पड़ती है।

चम्पावत टाइगर का यह रोचक किस्सा शुरू होता है, उन्नीसवीं सदी के आखिरी दशक में, जब नेपाल में महाकाली नदी के किनारे बसे एक गाँव में एक आदमखोर बाघिन का आतंक व्याप्त था। बाघिन की दहशत से आक्रान्त स्थानीय लोगों ने शिकायत की तो सेना का ध्यान इस तरफ गया। ये नेपाल में राजशाही का दौर था। तमाम कोशिशों के बावजूद नेपाल की शाही सेना जब उस बाघिन का शिकार नहीं कर सकी तो उन्होंने बड़ी मशक्कत के बाद बाघिन को नदी के इस पार यानि भारतीय सीमा में खदेड़ दिया और फिर बीसवीं सदी के आरम्भ में उस बाघिन ने चम्पावत के आसपास के गांवों में मृत्यु का ऐसा ताण्डव मचाया कि यहाँ के लोगों ने अपने घरों से निकलना बंद कर दिया। जब 1907 में इसकी सूचना जिम कॉर्बेट को मिली तो उन्होंने बाघिन की खोज में चम्पावत का रुख किया। 25 जुलाई 1875 को जन्मे जिम कॉर्बेट के पिता क्रिस्टोफर विलियम नैनीताल में पोस्ट मास्टर रहे थे और वह खुद रेलवे में मुलाजिम होने के साथ-साथ शौकिया शिकारी भी थे। वह अपनी किताब “मैन ईटर्स ऑफ़ कुमाऊँ” (1944) में लिखते हैं – “बाघिन की दहशत के कारण पिछले पांच दिनों से स्थानीय लोगों ने शौच के लिए भी घर से बाहर निकलना बन्द कर दिया था”। ‘कुमाऊँ के आदमखोर’ को भारत, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका में इतनी सफलता मिली थी कि इसके पहले ही संस्करण की ढाई लाख प्रतियाँ बिक गयीं और बाद में इसका सत्ताईस भाषाओं में अनुवाद किया गया।

खैर, कई दिनों की मशक्कत के बाद स्थानीय तहसीलदार और तकरीबन तीन सौ ग्रामीणों की मदद से चम्पावत के छतार पुल के पास जिम कॉर्बेट ने बहुत नजदीक से उस बाघिन को मार गिराया। जिम कॉर्बेट के दशकों के शिकारी जीवन में उनका यह पहला आदमखोर शिकार था। एक अनुमान के मुताबिक इस बाघिन ने नेपाल और कुमाऊँ में लगभग 430 लोगों को अपना निवाला बनाया था। प्रथम दृष्टया इस तरह की दुर्दांत आदमखोर बाघिन का मारा जाना सर्वथा न्यायोचित प्रतीत होता है। लेकिन कुछ दिनों बाद उस बाघिन की पोस्टमार्टम रिपोर्ट में यह पता चला कि बरसों पहले कभी जबड़े में लगी गोली के कारण वह जंगली जानवरों का शिकार करने की स्थिति में नहीं थी। ऐसे में बहुत सम्भव है कि अपनी उदरपूर्ति के साथ दो शावकों के भरण-पोषण के लिए उसे बस्तियों का रुख करना पड़ा और इसी मजबूरी में वह आदमखोर हो गई हो। मैन ईटर्स ऑफ़ कुमाऊँ की प्रस्तावना में कॉर्बेट ने माना है कि किसी बाघ को नरभक्षी बनाने के पीछे अक्सर लापरवाही से चलाई गई गोली का घाव जिम्मेवार होता है या कुछ मामलों में छोटे लेकिन खतरनाक जीव साही के साथ बाघ की भिड़न्त उसे लाचार बना देती है और वह नरभक्षी हो जाता है। इस घटना के बाद उन्हें आगरा और अवध के संयुक्त प्रांत की सरकार द्वारा कुमाऊँ और गढ़वाल डिवीजनों के आस-पास के गाँवों में लोगों पर हमला करने वाले आदमखोर बाघों और तेंदुओं को मारने के लिए अक्सर बुलाया जाने लगा था।

जिम कॉर्बेट एक कुशल शिकारी थे। जहाँ वह शिकार करने में दक्ष थे, वहीं एक अत्यन्त प्रभावशील लेखक भी थे। संसार भर में शिकार—कथाओं के बेहतरीन लेखकों में जिम कॉर्बेट का नाम में अग्रणी है। उनकी पुस्तक “माई इण्डिया” बहुत चर्चित है। इसमें सर्वत्र व्याप्त भारत का यशोगान उनके भारत—प्रेम को व्यक्त करता है। अपने लेखन में वह सदैव बाघों और अन्य वन्यजीवों की घटती संख्या के बारे में चिन्ता व्यक्त करते और आवाज उठाते रहे। आज विश्व में उनका नाम प्रसिद्ध शिकारी के रूप में आदर से लिया जाता है। बाघों की इंडो—चाइनीज उप—प्रजाति का वैज्ञानिक नाम ‘पैंथेरा टाइग्रिस कॉर्बेटी’ रखा गया है।

5 फरवरी 1952 को जब राजकुमारी एलिजाबेथ केन्या में एक विशाल शमी के पेड़ पर बनी झोपड़ी (ट्रीटॉप्स) में ठहरी थीं, कॉर्बेट उनके अंगरक्षक के रूप में तैनात थे। संयोग से उसी रात किंग जॉर्ज षष्ठम का निधन हो गया और 6 फरवरी को एलिजाबेथ ने तख्त—ओ—ताज सँभाल लिया। इस विचित्र घटना के बारे में होटल की आगन्तुक पंजिका में दर्ज कॉर्बेट की छोटी—सी टिप्पणी उनकी लेखन—शैली की विशिष्टता को दर्शाती है। “दुनिया के इतिहास में पहली बार, एक रोज एक युवा लड़की राजकुमारी के तौर पर एक पेड़ पर चढ़ती है और उस अनुभव के बाद, जिसे वह अपने जीवन का सबसे रोमांचकारी अनुभव बताती है, अगले दिन एक रानी होकर पेड़ से नीचे उतरती है। ईश्वर उसका भला करे।” जंगल में मानव के अवांछित हस्तक्षेप को उजागर करती चम्पावत टाइगर की यह कहानी आज हमें अपने पारिस्थितिकी तंत्र के प्रति संवेदनशील रहने का संदेश देती है। यदि हम जंगल को जंगल ही बना रहने दें, तो शायद फिर कभी किसी बाघिन को बस्ती में आकर हमारे घर को जंगल बनाने की जरूरत न पड़े। इस दिशा में किए गए प्रयासों का यह सुफल है कि आज विश्व में सर्वाधिक बाघ भारत में हैं। उल्लेखनीय है कि भारत में सर्वाधिक बाघों की पनाहगाह उत्तराखंड का कॉर्बेट टाइगर रिजर्व है। नैनीताल के पास स्थित इस रिजर्व का नाम उन्हीं जिम कॉर्बेट के नाम पर है जिन्होंने कभी चम्पावत टाइगर का शिकार किया था।



जीवन अनमोल



श्रीमती पूजा त्रिपाठी,
पत्नी श्री नवीन त्रिपाठी, स0ले0अ0

मनुष्य जीवन धरती पर उपस्थित पशु-पक्षी, जानवर आदि में प्रकृति का एक अनमोल हिस्सा है जो कि सर्वशक्तिशाली माना गया है। ईश्वर ने जीवन दिया है तो इसे हर्षोल्लास से ही व्यतीत करना चाहिए। एक घटना जो लगातार मैं समाचार के माध्यम से पढ़ या सुन रही हूँ वह मुझे विचार करने के लिए विवश कर रही है। कोचिंग के हब के नाम से प्रसिद्ध राजस्थान के कोटा शहर में हर साल पूरे देश से लाखों की संख्या में बच्चे आई0आई0टी0 और मेडिकल परीक्षा की तैयारी करने एक आशा लेकर आते हैं और माता-पिता भी बड़ी उम्मीदों के साथ खुद को आर्थिक एवं मानसिक रूप से तैयार करके उन्हें पढ़ाई के लिए भेजते हैं। तब अचानक पिता को यह सूचना मिले कि आपके बच्चे ने आत्महत्या कर ली, सिर्फ ये लिखकर कि सौरी मम्मी या पापा। क्या माता-पिता के संघर्षों का यही विराम था? एक के बाद एक घटित होती इस प्रकार की घटनाएं झकझोर दे रही हैं।

अब विचार करने की आवश्यकता है कि ऐसा क्यों हो रहा है? आजकल शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है, जिससे बच्चा अपनी योग्यता, क्षमता, आवश्यकता, परिस्थिति एवम् रुचि के अनुसार शिक्षा प्राप्त कर सके। हर बच्चा व्यक्तिगत विभिन्नता रखता है तथा प्रत्येक बच्चे में जन्मजात एवं अन्तर्निहित योग्यता होती हैं। किसी दूसरे पड़ोसी या रिश्तेदार को देखकर बच्चे का भविष्य निर्धारित नहीं किया जा सकता है। माता-पिता को चाहिए कि बच्चे के मनोभाव को समझने का प्रयास करें। बच्चे एवं माता-पिता के बीच आपसी सामंजस्य से इस प्रकार की घटनाओं को कम किया जा सकता है। माता-पिता को बच्चों पर किसी प्रकार का मानसिक दबाव नहीं बनाना चाहिए और बच्चों को भी इस प्रकार के कदम उठाने से पहले अपने परिवार के प्रति विचार करना चाहिए। हर मनुष्य के जीवन में अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों का आना-जाना लगा रहता है और असफलता भी जीवन में कुछ सीख दे कर ही जाती है। जीवन में मेहनत, लगन, संघर्ष और धैर्य को साथ लेकर चलना होता है न कि इनसे बचकर, तभी कोई न कोई दरवाजा अवश्य खुलता है।

सोशल मीडिया भी इस तरह की घटनाओं को बढ़ावा देने में कहीं न कहीं अहम भूमिका निभा रहा है। यह भी देखा जा रहा है कि कोचिंग संस्थानों द्वारा अच्छे अंक या रैंक लाने के अत्यधिक दबाव भी बनाए जाते हैं। हाल ही में शिक्षा मंत्रालय ने कोचिंग संस्थाओं में सोलह वर्ष से कम उम्र के विद्यार्थियों को एडमिशन देने पर रोक लगाई है।

अब प्रश्न उठता है कि क्या हमने अपना जीवन दूसरों के हाथों में सौंप दिया है? जीवन में सुख-दुःख की प्रक्रिया तो अनवरत चलती रहती है। जिस शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन की समस्याओं का समाधान करता है, उसी शिक्षा को जीवन पर हावी कर उसी जीवन को समाप्त करने का प्रयास क्यों कर रहा है?

जीवन अनमोल है, हमें इसे जीने का पूरा अधिकार है। अन्त में एक प्रेरक पंक्ति उद्धृत करती हूँ – “अंधकार भरे समय में भी प्रकाश की ओर ध्यान देना चाहिए।”

हरेला

श्रीमती प्रतिभा

पत्नी श्री बृज भूषण सेमवाल, वरिष्ठ लेखाकार



हरेला – पादप जीवन का आधार
जिन पर टिका हुआ संसार
जीव-जन्तु, जंगल-जमीन
पौधे के बिना नहीं है पार।
एक पौधा सौ संतान समान
प्रकृति-संरक्षण का मूल निदान
कुदरत का संतुलन,
वृक्षों को मिले सम्मान।।

हरेला – प्रकृति का उत्सव
पौधों से स्नेह-दुलार
इस पर्व की महिमा अपार
नन्हा पौधा, जीवन का आधार।
पौधा उन्नत भविष्य का सार
प्राणवायु का मूल आधार
बिन पौधे न छाँव मिले
जीवन में खुशी का नहीं आसार।।

पौधे रचते सृष्टि चक्र को
मानसून के खींचते तार
तन-मन को तृप्त करते
प्रकृति में लाते बहार।
पौधे जीवन का आधार
हरेला पर्व – हरीतिमा का
यह उत्सव प्रकृति के विश्व शृंगार का
आओ पौधे रोपें
धरा का रूप निखारें
वृक्षों से करें स्नेह अपार
पौधे ही तो हैं
जीवन का आधार।।



मेरा परिवार

कु० नव्या त्रिपाठी
सुपुत्री श्री नवीन त्रिपाठी
सहायक लेखाधिकारी



छोटा सा है मेरा परिवार
मस्ती भर का है संसार,
मेरी छोटी बहन जब भी आती है
खेलने भर का मन लाती है।
मेरे पापा कितने अच्छे
शानदार चीजें हैं लाते,
मेरी मम्मी कितनी अच्छी।
जब मदद चाहिए झट आ जाती,
छोटी सा है मेरा परिवार.....



आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत
करते हैं, उसी तरह लिखा
कीजिए। भाषा बनावटी
नहीं होनी चाहिए।



महावीर प्रसाद द्विवेदी

राजभाषा संबंधी ई-टूल्स

ज्योति रानी समादार
कनिष्ठ अनुवादक



सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग उत्तरोत्तर बढ़ रहा है किन्तु अभी भी काफी काम अंग्रेजी में हो रहा है। राजभाषा नीति का उद्देश्य है कि सरकारी कामकाज में सामान्यतः हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग हो। यही भारतीय संविधान की मूल भावना के अनुरूप होगा। कहने की आवश्यकता नहीं है कि जन साधारण की भाषा में सरकारी कामकाज करने से विकास की गति तेज होगी और प्रशासन में पारदर्शिता आएगी।

तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन का आयोजन दिनांक 14-15 सितम्बर 2023 को श्री छत्रपति शिवाजी क्रीड़ा संकुल, बालेवाड़ी, पुणे (महाराष्ट्र) में किया गया। इस अवसर पर, भारत सरकार के विभिन्न कार्यालयों के सचिव, विभिन्न बैंकों और सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रमों के उच्चाधिकारी और देश भर से आये हिंदी विद्वानों सहित भारत सरकार के नौ हजार से अधिक अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने वीडियो संदेश के माध्यम से सभी को शुभकामनाएं दी। इसी अवसर पर मंचासीन अतिथियों द्वारा सरकारी कामकाज में कंठस्थ 2.0 टूल के एकीकरण की शुरुआत की गई। अब ई-ऑफिस में काम करते हुए भी इस टूल की सहायता से त्वरित अनुवाद प्राप्त किया जा सकता है और फाइल में उसका प्रयोग किया जा सकता है। साथ ही, हिंदी शब्द सिंधु संस्करण-2 हिंदी शब्दकोश (3,51,000 शब्दों के साथ नवीन संस्करण) को भी लोकार्पित किया गया। उपर्युक्त के अतिरिक्त राजभाषा हिंदी के प्रयोग सम्बन्धी नियम-पुस्तक के नवीन संस्करण का भी भव्य लोकार्पण किया गया।

(क) **हिंदी शब्द सिंधु** – यह बृहत् शब्दकोश हिंदी तथा देश की अन्य भाषाओं को समृद्ध करने की दिशा में विकसित किया जा रहा है। इसमें विभिन्न विषयों— जनसंचार, आयुर्वेद, खेलकूद, अंतरिक्ष विज्ञान, भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीवविज्ञान, वैमानिकी, कम्प्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स, भू-गर्भशास्त्र, मानविकी आदि से सम्बंधित शब्दावली के साथ-साथ पारंपरिक शब्दावली को भी समाहित किया जा सकता है। इस शब्दकोश में शब्द की प्रविष्टि के साथ-साथ उसकी व्याकरणिक कोटि, अर्थ, पर्याय, आवश्यकतानुसार प्रयोग, विलोम, मुहावरे एवं तत्संबंधी अन्य आवश्यक जानकारी दी गयी हैं। यह शब्दकोश पूर्णतया डिजिटल तथा खोजपरक (सर्चबल) है। यह एक ऐसा शब्दकोश होगा जो पूर्णतः अद्यतन और समावेशी होगा तथा इसमें हिंदी में प्रयुक्त होने वाले सभी शब्दों का अर्थ सहित संग्रह होगा। इस शब्दकोश में हिंदी और हिंदी क्षेत्र की भाषाओं, बोलियों, और उपभाषाओं के शब्द, अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्द, मीडिया और न्यू मीडिया के शब्द, तकनीक और विज्ञान तथा विधि एवं न्याय के शब्द शामिल किए जा रहे हैं। यह पूर्णतया डिजिटल वेब आधारित होगा। इसे केंद्रीय हिंदी निदेशालय निर्धारित मानकीकृत वर्तनी के अनुसार तैयार किया जा रहा है। इसमें यूनिकोड फॉण्ट का उपयोग किया जा रहा है तथा इसमें हिंदी, अंग्रेजी में टंकण कर शब्द खोजने की सुविधा होगी।

(ख) **कंठस्थ 2.0** – अनुवाद सारथी के इस अद्यतन संस्करण में तीन नयी विशेषताएं शामिल की गयी हैं जिससे यह अब बेहद उपयोगी सॉफ्टवेयर बन गया है। ये फीचर इस प्रकार हैं –

न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन अर्थात् मशीनी अनुवाद (एन.टी.एम.)– इस सुविधा के अनुसार अब यह न केवल अपनी मेमोरी (जिसमें इस समय करीब 25 लाख वाक्य हैं) से अनुवाद देगा बल्कि मशीनी अनुवाद भी उपलब्ध कराएगा।

स्मार्ट चैटबोट— यह May I Help You की तरह है। इसमें नए प्रयोक्ता के लिए बहुत सारे प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दिए गए हैं। आप इन्हें एक प्रकार से “अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न” कह सकते हैं। इनसे प्रयोक्ताओं को कंठस्थ का प्रयोग करने में बहुत महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होगी।
वॉइस टाइपिंग— अब इस सॉफ्टवेयर में टाइपिंग करने के लिए वॉइस टाइपिंग की सुविधा भी उपलब्ध करा दी गई है। प्रयोक्ता बोलकर भी टाइप कर सकते हैं।

शिक्षा मंत्रालय के केन्द्रीय हिंदी संस्थान और सी-डैक, पुणे के सहयोग से ‘लीला राजभाषा’ और ‘लीला प्रवाह’ को उन्नत करने के प्रयास भी किए जा रहें हैं, जिसमें हिंदीतर भाषा-भाषी लोगों द्वारा इसका अधिकाधिक प्रयोग किया जा सकेगा। राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर ‘लीला’ राजभाषा के माध्यम से अंग्रेजी के अतिरिक्त 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी भाषा का प्रशिक्षण ऑनलाइन दी जाने की सुविधा उपलब्ध है। अतः गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा आयोजित किए जा रहे राजभाषा के प्रशिक्षण एवं कार्यशाला में भाग लेने के लिए सरकारी कोष से अनावश्यक धन खर्च करना उचित नहीं है।

राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर “ई-सरल हिंदी वाक्यकोश” शीर्षक के अंतर्गत सामान्यतः अंग्रेजी में प्रयोग होने वाले वाक्यों के हिंदी अनुवाद दिए गए हैं जिनके प्रयोग से अधिकारी फाइलों पर सामान्य टिप्पणियां आसानी से हिंदी में लिख सकते हैं। हमें अपने कार्य-व्यवहार में आम जीवन में प्रचलित शब्दों के प्रयोग पर बल देना चाहिए ताकि सामान्य नागरिक सरकारी नीतियों/कार्यक्रमों के बारे में सरल हिंदी में जानकारी प्राप्त कर सकें।

केंद्र सरकार के कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारियों का यह संवैधानिक दायित्व है कि वे सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रेरणा मिलेगी तथा राजभाषा नीति के अनुपालन में गति आएगी।

অসমীয়া (Assamese) বাংলা (Bengali)
 ગુજરાતી (Gujarati) हिन्दी (Hindi) ಕನ್ನಡ (Kannada) کٲشُر (Kashmiri)
 മലയാളം (Malayalam) মৈতৈলোত্ (Manipuri/Methei)
 मैथिली (Maithili) मराठी (Marathi) नेपाली (Nepali) ଓଡ଼ିଆ (Oriya)
 ਪੰਜਾਬੀ (Punjabi) संस्कृत (Sanskrit) संताली (Santali)
 தமிழ் (Tamil) తెలుగు (Telugu) اردو (Urdu) الْعَرَبِيَّةُ (Arabic)
 မြန်မာစာ (Burmese) മൊറോക്ക: (Mon) සිංහල (Sinhalese)

थैंक्यू अंकल जी !!

प्रशान्त कुमार
सहायक लेखाधिकारी



आज की भाग-दौड़ भरी जिन्दगी में दिल्ली जैसे शहर में एक गरीब परिवार को जीवन-यापन करने के लिए बड़ी मशक्कत करनी पड़ती है। प्रताप का परिवार इन्हीं गरीब परिवारों में से एक था। प्रताप पेशे से मोची था जो शाहदरा स्टेशन के बाहर सड़क किनारे बैठा करता था और पूरे दिन कड़ी मेहनत करने के बाद अपने परिवार के लिए दो वक्त के खाने का इंतजाम कर पाता था। प्रताप के परिवार में उसकी पत्नी मंजुला, बेटा दीपक और बेटी ज्योति थे। परिवार गरीब जरूर था लेकिन दीपक और ज्योति के होने से दोनों गरीबी में भी खुश रहते थे। प्रताप को बच्चों की परवरिश को लेकर चिंता जरूर रहती थी और इसीलिए प्रताप ने दोनों बच्चों को स्कूल भेजने और उन्हें जरूरत की चीजें मुहैया कराने को हर सम्भव प्रयास कर रहा था।

मार्च 2020 में कोरोना की मार ने अचानक दिल्ली को हिला दिया। अचानक लगे देशव्यापी लॉकडाउन से पूरे देश में काम कर रहे दैनिक मजदूरों को यूँ लगा जैसे किसी ने उनके मुँह से निवाला छीन लिया हो। प्रताप भी उसी लॉकडाउन का शिकार दैनिक मजदूर था। घर में खाने तक की दिक्कतें महसूस होने लगी। सरकार द्वारा उपलब्ध कराये गये राशन से थोड़ी राहत मिली। लेकिन प्रताप बच्चों को देख परेशान रहता था क्योंकि परिवार के लिए सब कुछ रुक-सा गया था। बीच-बीच में प्रताप को दूध, सब्जी इत्यादि के लिए बाजार जाना पड़ता था। इसी आने-जाने में कई बार प्रताप को तबीयत ठीक-सी नहीं लगती, तो वह डर जाता कि कहीं उसे कोरोना तो नहीं हो गया। एक छोटे से एक कमरे में रहने वाले प्रताप का जब पड़ोस के सरकारी अस्पताल में चेक-अप कराया गया तो वह संक्रमित निकला। मेडिकल टीम ने प्रताप को चिह्नित कर आइसोलेशन वार्ड में डाल दिया, साथ में परिवार की जाँच भी की गयी और उसकी पत्नी भी संक्रमित पायी गई। अब मंजुला को भी अस्पताल में भर्ती कर दिया गया। 8 साल का दीपक अपनी 6 साल की छोटी बहन ज्योति के साथ घर पर रह गया। दीपक कहने को महज 8 साल का था, लेकिन पिता के साथ रहते रहते काफी समझदार हो गया था। दीपक अकेले ही ज्योति की देखभाल कर रहा था – उसे खाना खिलाना, नहलाना, कपड़े धोना इत्यादि। दूसरी तरफ प्रताप और मंजुला बीमारी एवं सन्तान वियोग की दोहरी मार झेल रहे थे। दोनों इसी मारे इतने कमजोर हो गये थे कि लगभग 02 सप्ताह में ही जिन्दगी को अलविदा कह गये। दीपक और ज्योति दोनों इस बात से बेखबर घर में रह रहे थे।

जब काफी दिन तक कोई खबर नहीं मिली तो दीपक ने अपने पड़ोसियों से उनके बारे में आवाज लगा के पूछने की कोशिश की। लेकिन उस समय माहौल ऐसा था कि किसी को भी किसी के बारे में पूरी जानकारी नहीं थी। घर का राशन खत्म होने पर दीपक पास के दुकानदार से खाने के लिए सामान माँगने गया। दुकानदार ने तरस खाकर थोड़ा सामान दे दिया। लेकिन अगली बार बिना पैसे दिये कुछ ना देने को बोल दिया। दीपक घर आकर सोचने लगा कि पता नहीं उसके पापा-मम्मी कब आयेंगे। तब तक मैं ज्योति की देखभाल कैसे करूँगा। उसे खाना कैसे खिलाऊँगा। दीपक ने मन में ठान लिया कुछ तो करना ही पड़ेगा। कोने में रखी प्रताप की गठरी पर दीपक का ध्यान गया जिसमें उसके पापा का मोची का सामान रखा हुआ था। दीपक पापा को अक्सर काम करता देखा करता था तो उसे लगा वह भी पापा का काम कर सकता है। हालाँकि लॉकडाउन चल रहा था। लेकिन समयानुसार लॉकडाउन में कुछ ढील थी। उसी समय में दीपक गठरी से थोड़ा सामान निकालकर चौराहे पर पहुँचा। उसकी बहन भी उसके साथ थी।

चौराहे पर खड़े पुलिसकर्मियों की नजर दीपक और ज्योति पर पड़ी। वहाँ खड़े एक पुलिसकर्मी ने इन बच्चों को समझा कर घर भेजना चाहा। तब तक दीपक सड़क किनारे बैठ चुका था। अचानक से दीपक का ध्यान उस पुलिसकर्मी पर गया, जो उसी ओर आ रहा था। उसके हाथ में डंडा भी था। दीपक और ज्योति घबरा गये। दीपक की आँखों में डर के मारे हल्के आँसू भी आ गये। वह पुलिसकर्मी दीपक के पास आकर बैठा और बोला— बेटा, लॉकडाउन चल रहा है, घर जाओ। दीपक दबी—सी आवाज में बोला— अंकल जी, पापा—मम्मी अस्पताल गये हैं और काफी दिन हो गये, वो वापस नहीं आये, घर में खाने को कुछ नहीं है। बहन को खाना खिलाने के लिए पैसे चाहिए इसलिए मैं पापा का सामान ले आया। पुलिसकर्मी दीपक की बात सुनकर स्तब्ध रह गया। उसकी आँखें गीली हो गईं। पुलिसकर्मी ने दोनों बच्चों को गले से लगा लिया और कहा— बेटा जब तक तुम्हारे मम्मी—पापा वापिस नहीं आते तुम्हें खाना मैं खिलाऊंगा। तुम्हें यहाँ बैठने की जरूरत नहीं है। दोनों बच्चे अंकल जी की बात सुन चहक उठे और पुलिसकर्मी को प्रेम से बोले — थैंक्यू अंकल जी !!

एक कहानी जिसमें, सभी हकीकत से अनजान हैं।



खाट हूँ मैं

शिवम् लिहौरी
लेखाकार



आँगन में पड़ी खाट हूँ मैं
टन-टन कर आती चाट हूँ मैं
चूरन के लिए हुई लूट-पाट हूँ मैं
कभी अमरुद की मिठास
कभी जामुन की खटास
हरसिंगार के फूलों से सपाट हूँ मैं
आँगन में पड़ी...

चौखट पर सजी कश्मीरी हाट हूँ मैं
सब्जीवाले के तराजू का बाट हूँ मैं
गुल्ली-डंडे, गेंद और बल्ले
शाम को सुस्ताती थकान हूँ मैं
गिल्ली मिट्टी की सौंधी खुशबू
बारिश में महकता मकान हूँ मैं
पूरी हलवा खीर और शरबत
मेल-मिलाप मुहब्बत हूँ मैं
बाबूजी से मिली दुआ हूँ मैं
पीहर से नम आँखें लिए
ससुराल को लौटती बुआ हूँ मैं
शेष-शैय्या सी देती ठाट हूँ मैं
आँगन में पड़ी...

तानो से हुआ जी उचाट हूँ मैं
दादी को दिखता हरि स्वरूप विराट हूँ मैं
आम की बौर, नीम की छाँव तले
इंतजार की फांस से हुआ
अम्मा की आँखों का घाव हूँ मैं
नंगे पाँव पड़ने वाली डाट हूँ मैं
आँगन में पड़ी...

जर्जर हो रही कपाट हूँ मैं
गुस्से में दहकी ललाट हूँ मैं
मन पटल पर लगी चोट हूँ मैं
बटवारे की लड़ाई में
अम्मा का कीमती वोट हूँ मैं
यादों की नदी का कच्चा घाट हूँ मैं
समय के साथ उधड़ी है जिसकी निवाड़
हाँ.हाँ...
आँगन में पड़ी वो ही टूटी खाट हूँ मैं



माँ

राजेश अधिकारी
वाह्यस्रोत कर्मी



जब अकेला रहा तो उसकी याद आयी,
अँधेरे में था तो उसकी याद आयी ।
जब भूख लगी तो उसकी याद आयी,
नींद नहीं आये तो उसकी याद आयी ।
सोचने में कितनी आसान लगती थी ये जिंदगी,
जब खुद से जीना सीखा तो उसकी याद आयी ।
तब भी लगा की माँ इतनी मतलबी कैसे हो सकती है,
हमसे भी ज्यादा हमारे लिए कैसे सो सकती है ।
लेकिन सच तो ये है कि वो माँ ही होती है,
जो हमारा पेट भरकर खुद भूखी रहती है ।।



भाषा की सरलता, सहजता और
शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता
प्रदान करती है। हिंदी ने इन
पहलुओं को खूबसूरती से
समाहित किया है।



नरेंद्र मोदी

vHk ; nku



श्री विक्रान्त कुमार
सहायक लेखाधिकारी

मन के इस अतिक्रमण से, माँग रहा अभयदान तुम्ही से,
दान करो प्रभु निश्छल जीवन, बिन आस को बस आस तुम्ही से।
तुम्ही बनाते तुम्ही मिटाते, तुम्ही हो कर्ता कर्म तुम्ही से,
तुम्ही हो जीवन अन्त तुम्ही हो, तुम्ही हो साँसें काल तुम्ही से।
तुम से ही पुलकित नव जीवन, माया तुमसे मोक्ष तुम्ही से,
प्रेम दीपक भी तुम्ही जलाते, तुम्ही कराते सब काज प्रभु।
कलियुग में सब अपना चाहे, बने कलि के सब दास प्रभु,
कलि के लीलन से पहले, बन कल्कि ये काल हरो प्रभु।
जकड़ रहा मन को निस दिन, माया का मोहपास प्रभु,
दया करो इस निर्धन पर भी, हो जाए वैतरणी पार प्रभु।।





मनसा देवी का मन्दिर— शिवालिक पर्वत के एक शिखर पर बना माँ मनसा देवी का मन्दिर स्थित है। मनसा देवी आदिशक्ति माँ दुर्गा जी का प्रतिरूप है। मन्दिर में तीन सिर और पाँच भुजाओं वाली माँ की प्रतिमा स्थित है, जो भक्तों की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण करती हैं। मन्दिर मुख्य सड़क से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। तीर्थ यात्री यहाँ पैदल मार्ग से या उड़नखटोला (ट्रॉली) से भी जा सकते हैं।

चण्डी देवी का मन्दिर— मुख्य सड़क से मात्र 5 किलोमीटर की दूरी पर शिवालिक पर्वतमाला के नील पर्वत पर स्थित है। तीर्थयात्री माँ चण्डी देवी के दर्शन हेतु पैदल मार्ग व उड़नखटोला (ट्रॉली) से जा सकते हैं।

माया देवी मन्दिर— 11वीं शताब्दी में निर्मित माया देवी मन्दिर में माँ माया देवी की दिव्य स्वरूप वाली प्रतिमा स्थापित है। कहा जाता है कि पहले यह मन्दिर बड़ा समृद्धिशाली था पर तैमूरलंग ने इस पर आक्रमण करके इसे नष्ट कर दिया था, तब से इस मूर्ति में आज भी दरार पड़ी हुई है।

भीम गोडा मन्दिर व कुण्ड— पाँच पांडव भाईयों में से दूसरे यानि भीम के नाम से प्रसिद्ध भीम गोडा व कुण्ड हरकी पौड़ी से मात्र एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस पवित्र नगरी में कुण्ड को भीम ने धरती पर घुटना मारकर बनाया था।

सप्तऋषि आश्रम— भीम गोडा से मात्र चार किलोमीटर की दूरी पर सप्त सरोवर नाम से यह तपोभूमि है। यहाँ कश्यप, भारद्वाज, अत्रि, गौतम, जमदग्नि, विश्वामित्र और वशिष्ठ इन सात ऋषियों ने तप किया था। इन्हीं के कारण गंगा यहाँ सप्त धाराओं में विभक्त होती है। यहाँ सन 1954 में सप्तऋषि आश्रम का निर्माण हुआ। आश्रम में भगवान शंकर का मुख्य मन्दिर है। कुछ दूरी पर सात कुटियाँ हैं, जो सप्तऋषियों के नाम से प्रसिद्ध हैं।

ब्रह्मकुण्ड— शिव पुराण, स्कन्द पुराण एवं पद्म पुराण के अनुसार यह पवित्र स्थान त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश से सम्बंधित है। तीनों देवों ने अपने भक्तों की पुकार सुनकर इस तीर्थ में आकर पवित्र कर इसे महान से महानतम कर दिया। कहा जाता है कि एक समय राजा श्वेत की पुकार पर ब्रह्मा जी ने प्रसन्न होकर उन्हें साक्षात् दर्शन दिया और अपने भक्त से वर माँगने को कहा तब राजा श्वेत ने कहा मुझे कुछ वर नहीं चाहिये लेकिन मैं यह चाहता हूँ कि जिस स्थान पर आप खड़े हैं, यह आपके के नाम से प्रसिद्ध हो और यहाँ पर भगवान नारायण और बाबा भोलेनाथ निवास करें। ऐसा सुनकर ब्रह्माजी प्रसन्न हो गये और कहा कि यह कुण्ड मेरे नाम से जाना जायेगा, जो भक्त, तीर्थयात्री या जीव इसमें स्नान करेगा वह परमपद का अधिकारी होगा और उसे स्वर्ग की प्राप्ति होगी। उसे बार-बार इस जीवात्मा में जन्म नहीं लेना होगा अर्थात् मोक्ष प्राप्त होगा। तभी से इस स्थान का नाम ब्रह्मकुण्ड के नाम से जाना जाता है।

दक्ष प्रजापति का मन्दिर— हरिद्वार के कनखल में गंगातट पर माँ सती के पिता दक्ष प्रजापति के नाम का प्रसिद्ध मन्दिर है। कहा जाता है कि प्रजापति दक्ष जी ने एक बड़े यज्ञ का आयोजन किया जिसमें सभी देवताओं, मनुष्य, यक्ष, किन्नर, ऋषियों और मुनियों को आमन्त्रित किया लेकिन किसी विद्वेष से भगवान भोलेनाथ और माता सती को आमंत्रित नहीं किया। जब माता सती ने सुना कि मेरे पिता के घर में एक भव्य यज्ञ का आयोजन हो रहा है तो सती ने शिवजी से यज्ञ में चलने का आग्रह किया। लेकिन शंकर जी ने कहा कि हमें आमंत्रित नहीं किया गया है इसलिए बिना आमंत्रण के जाना उचित नहीं होगा। लेकिन माँ सती नहीं मानी और यज्ञ में सम्मिलित होने के लिये अपने पिता प्रजापति दक्ष के घर चली गयीं। लेकिन उस उत्सव में जब सती जी को यह ज्ञात हुआ कि उनके पति शिवजी को जानबूझकर आमंत्रित नहीं किया गया है तो वह क्रोधित हो गयीं और उसी यज्ञ कुण्ड में अपनी देह त्याग देने का संकल्प लेकर अपने प्राणों की आहुति दे दी।

उनकी स्मृति में यहाँ भव्य मन्दिर बना हुआ है। कहते हैं कि जो भी सतीकुण्ड में जाकर भगवान शंकर जी से अपनी गलती, पापों की क्षमा याचना करता है, पूजन करता है या स्नान करता है उसे मोक्ष की परम गति प्राप्त होती है।

परमार्थ आश्रम— गंगा जी के पश्चिमी तट पर सप्त सरोवर के निकट स्थित है, परमार्थ आश्रम। इस आश्रम में पौराणिक देवताओं, ऋषियों, महर्षियों तथा भारतीय समाज सुधारकों की सुन्दर मूर्ति स्थापित है। आश्रम में श्री राम दरबार और माँ दुर्गा की भव्य प्रतिमा स्थापित है।

साधु बेला आश्रम— अतिथियों व तीर्थयात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त वातानुकूलित कमरे उपलब्ध हैं जिससे उन्हें खाने व रहने में कोई असुविधा ना हो।

शांति कुंज— शांति कुंज वेदमाता गायत्री की महिमा के प्रचार-प्रसार व गायत्री जप-उपासना के लिए बनाया गया है, जहाँ भक्तों और तीर्थ यात्रियों को गायत्री जप तथा ध्यान करके मन की शांति और आनन्द की अनुभूति प्राप्त होती है।

कुम्भ मेला

हरिद्वार में हर बारह वर्ष में कुम्भ का मेला लगता है और हर 6 वर्ष में अर्द्धकुम्भ मेला लगता है। जिसमें विभिन्न अखाड़ों के साधु-संत, तीर्थ यात्री और श्रद्धालु विभिन्न पर्व पर स्नान करते हैं। माँ गंगा उनके पापों को धोकर उन्हें पापमुक्त कर देती हैं। इसे शाही स्नान भी कहा जाता है। हरिद्वार में सायं के समय गंगा आरती होती है जिसमें श्रद्धालु माँ गंगा की आरती में शामिल होकर माँ गंगा जी का पूजन-अर्चन करते हैं। माँ गंगा की आरती के समय ऐसा लगता है पूरे जीवन भर इसी स्थान पर बैठकर माँ गंगा की साधना करें। आप भी अपने जीवन काल में एक बार हरिद्वार आयें तो माँ गंगा जी के दर्शन करें, स्नान करें, अपने पाप आदि को धोकर पुण्य के भागीदार बनें।



सपने



विनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)

सपने कितने अपने
हसीन ख्वाब के सपने,
वैभव-संपदा के सपने,
दिल बाग-बाग होने के सपने।

सपने कौन नहीं देखता जनाब,
सपने ही तो हैं
जो जगाते हैं
एक उम्मीद की किरण
दिखाते हैं राह,
आगे बढ़ने की।

है हक सभी को
सपने देखने का
ख्वाब बुनने का
ऊँचाईयाँ
जो छू नहीं सके कभी
हकीकत में, उन तक
ख्वाबों में पहुँचने का।

जरूरी नहीं कि
सपने सोने पर ही आएँ
सपने तो वो हैं
जो आदमी देखता है
जागते हुए,
जो नहीं देते सोने
हसीन ख्वाब के सपने
ऊँची उड़ान के सपने।।



सखी

शिवम् लिल्हौरी
लेखाकार



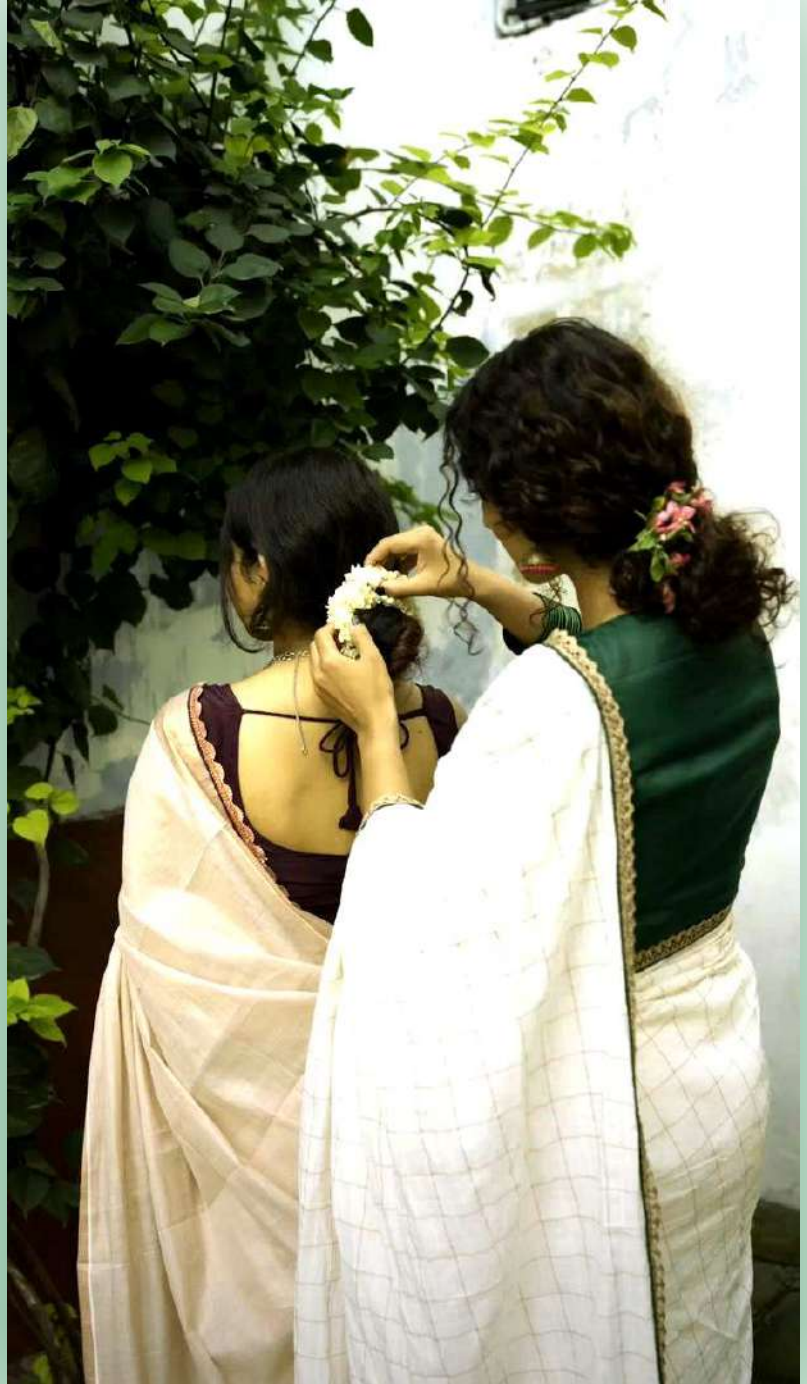
ए री सखी, सुन, सुन री सखी!
आज, मनवा मेरा बहुत दुःखी
छाये मेघ कितने घनेरे
किस संग बैठूं सांझ सवेरे ।

खुशी तो मेरी सौतन ठहरी
रिसे अखियन भरी दोपहरी
बताऊं तोहे हाल ये अपना
कैसे टूटा मेरा सपना ।

कल-कल नदिया बहती जावे
पीहर पीछे छूट सा जावे
बात पिया की, बात जिया की
सुलगे जैसे बाती दिया की ।

उसकी आस में पलकें बिछाये
चौखट पर मैं डेरा जमाये
आना था ना आया बैरी
जोगन बन गई आस में तेरी ।

आया तो बस आया कागा
काँव-काँव कर फिर से भागा
गम तो अब अपना सा लागे
रब के पास, मोहे ले जावे ।



जीवन

विक्रान्त कुमार
सहायक लेखाधिकारी



जीवन को शब्दों में सटीक परिभाषित कर पाना एक कठिन कार्य है, क्योंकि जीवन की परिभाषा हर व्यक्ति के लिए अलग-अलग होती है। एक दरिद्र के लिए सायंकाल के भोजन की व्यवस्था करना ही जीवन है, उसे सम्पूर्ण दिवस बस इसी की चिन्ता लगी रहती है कि सायंकाल में भोजन मिलेगा अथवा नहीं, वहीं दूसरी ओर एक सम्पन्न व्यक्ति सम्पूर्ण दिवस अपनी धन सम्पदा में वृद्धि के उपायों के बारे में सोचकर चिन्तित रहता है। वास्तव में जीवन जीना और उसको निभाना दोनों पृथक विषय हैं। अधिकतर व्यक्ति जीवन को निभाते हैं, उसे जीते नहीं हैं। निभाना सरल है, धारा में बहना है, कोई विरोध नहीं, विरोध करना उचित प्रतीत नहीं होता, इसलिए निभाते हैं। जीवन के परिवेश में मनुष्य इतना बाध्य हो जाता है कि उसे निभाना ही पड़ता है।

प्रश्न यह उठता है कि क्या वास्तव में जीवन जीना सम्भव है या ये मात्र पुस्तकों में लिखी शब्दावली भर है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह शायद व्यवहारिक भले प्रतीत नहीं होता परन्तु असम्भव नहीं है। जीवन जीने हेतु जीवन का महत्त्व, उद्देश्य एवं इसकी परिपूर्णता को समझना आवश्यक है। हमारे पूर्वजों ने जो संस्कार बनाये हैं, उससे जीवन की पूर्णता प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त होता है। वास्तव में वो निमित्त मात्र हैं, ये संस्कार हमें जीवनचक्र के अनेक बिन्दुओं के सम्बन्ध में केवल अवगत कराते हैं, इन्हें सच में पूर्ण कर पाना व्यक्ति एवं उसके परिजनो पर निर्भर करता है।

आधुनिक काल में हम सभी दैनिक क्रिया-कलापों में व्यस्तता के कारण सिर्फ संस्कारों को क्रिया मात्र समझकर क्रियान्वित करते हैं, उसका वास्तविक तात्पर्य न समझते हैं और न ही समझना चाहते हैं। इसी कारण हम वेदों और धर्म की उपेक्षा करना उचित समझते हैं क्योंकि समझना कठिन है, उपेक्षा करना सरल है। वास्तव में सनातन संस्कृति में जीवन को मूलरूप से पूर्ण करने हेतु एवं उसको सम्पूर्ण रूप से जीने हेतु ही अनेक प्रयोगों को सैद्धान्तिक रूप से परिचालित किया गया था और पीढ़ी-दर-पीढ़ी इनमें बदलाव होने का कारण मनुष्य की आधुनिकता में व्यस्तता है।

अब इन दिनों किसी के पास इतना समय तो है नहीं है कि सम्पूर्ण वेदों का अध्ययन किया जा सके। अतः व्यवहारिकता की दृष्टि से देखने पर अपने कर्तव्यों का पालन पूर्ण निष्ठा से करना, किसी को अपने लाभ हेतु कष्ट न पहुँचाना एवं सत्कर्मों से जीवन-यापन करना भी जीवन जीने हेतु अवश्य सहायक होंगे। यदा-कदा जब हम किसी असहाय की सहायता करते हैं तो जो मन को शान्ति और तृप्ति का भाव प्राप्त होता है वही जीवन की पूर्णता है। जब दूसरों का कष्ट भी अपना कष्ट लगने लगे तो समझो कि जीवन जीना आ गया। हमेशा सहायता का भाव मन में अवश्य रखें। तुलना करने से मन में अशान्ति उत्पन्न होती है जो हमें गलत मार्ग पर चलने को विवश करती है। “जो प्राप्त है वो पर्याप्त है” का भाव ही सर्वश्रेष्ठ है।

विश्वास की मुस्कान

संजीव जखमोला
सहायक पर्यवेक्षक



सुबह हो चुकी थी। जिंदगी अपनी शुरुआत नई सुबह से कर रही थी। विश्वास की सुबह भी हो चुकी थी, जिसकी उम्र सिर्फ 8 वर्ष थी। कल रात वह एक रोटी खाकर सोया था, शरीर पूरी तरह से थका था, किंतु उसकी छः वर्षीय छोटी बहन मुस्कान अपने भाई की उम्र से ज्यादा की होने का परिचय देते हुए उसको सोने में सहायता करती है। यह बात और थी कि नन्हा विश्वास उसको खाना खिलाकर उसके सोने के बाद ही सोता है। विश्वास को यह संघर्ष उसके बचपन में ही प्राप्त हो गया था और जाने-अनजाने ईश्वर की मर्जी से यही संघर्ष उनके जीवन का हिस्सा बन गया था। कठिन समय में सगे-संबंधियों का साथ भी उतना ही सीमित हो चला था, जो संघर्ष अनुभव की माला में एक मोती की तरह गुँथ गया था।

नन्हें विश्वास ने कभी यह नहीं सोचा था कि ऐसा इतनी जल्दी होगा और बचपन का सही अर्थ शायद जीवन से खो जायेगा। विश्वास अन्य सभी की तरह नित्य कार्यों को पूर्ण करने के बाद प्रत्येक दिन के अनजाने संघर्षों से रू-ब-रू होने चल दिया था। उसका कर्म स्थल फुटपाथ से ही शुरू होकर वहीं खत्म होता था। बचपन को सिसकते, बिखरते हुए देखना हो तो संभ्रांतों के फैलाये हुए कचरे में ऐसा बचपन अक्सर मिल जाया करता है।

दिनभर का संघर्ष समेटे हुए विश्वास और उसकी बहन मुस्कान रोज आने वाले रास्तों के बीच बेफिक्री से अपनी आजीविका को तलाशते हुए दिखाई दे जाते हैं। विश्वास और मुस्कान का संघर्ष जीवन के कटु सत्य और सामाजिक जिम्मेदारी को आईना दिखाता है। समाज में अक्सर उसकी चिंता रहती है, मनन भी होता है, किन्तु इसको दूर करने का चलन नहीं दिखता। शायद सत्य यही है कि ऐसे संघर्षों में बचपन की बलि चढ़ जाती है। कुछ कटु अनुभवों से यहाँ ईश्वर के होने का एहसास भी होता है कि वह किसी को भी अकेला नहीं छोड़ता है। जहाँ बचपन मस्त-मौला होता है, बेफिक्र होता है और अपनों के द्वारा देख-रेख में बीतता है। वहीं इन दोनों के बचपन में ऐसा कुछ भी दिखाई नहीं देता है। दोनों का संघर्ष ईश्वर की देन है और समाज को दिखाने का एक आईना भी है। छत के नाम पर खुला आकाश और बिछौने के नाम पर फुटपाथ, यह बेहतर स्थिति तो नहीं, किन्तु जीवन को ईश्वर के करीब होना प्रदर्शित करती है। इसके कई मायने हैं –

आसमां ओढ़कर सोता बचपन, धरती के बिछौनों पर।

मुस्कुराता रहा फिर भी, जीवन के कोनों पर।।

हर सुख से वंचित ऐसा बचपन ईश्वर की फुटपाथी पाठशाला से प्राप्त अनुभवों के चलते कई संरक्षक-प्राप्त बचपनों की तुलना में अनुभवी होता है। इतने संघर्षों में विश्वास और मुस्कान को कभी बिखरते हुए नहीं देखा। चिन्ताओं से कोसों दूर उनको तनिक भी खाने और बिछौने तक की चिन्ता नहीं है। अक्सर जीवन के कटु संघर्ष फुटपाथ पर ही दिख जाते हैं। संघर्ष भरे प्रत्येक दिन को सुबह आते हुए देखना और शाम को लौटते हुए, दोनों की चमकती आँखों और मनमोहक मुस्कुराहट के सामने संघर्ष बोना पड़ जाता है। समाज के कई कटु अनुभवों से इतर विश्वास अपनी श्रेष्ठता साबित करते हुए हर संघर्ष को पूर्ण कर देता है और वहीं दूसरी ओर मुस्कान संतुष्टि की मुस्कुराहट समेटे हुए होती है।

जहाँ प्रत्येक दिन हम प्रयास करते हैं बहुत सी सुविधाओं के साथ संतुष्टि पाने के लिए, पर ठीक ढंग से मुस्कुरा नहीं पाते हैं। विश्वास कई बार बिखर जाता है और अंत में हम संघर्षों में ही खड़ा पाते हैं। वहीं कितनी सरलता से विश्वास मुस्कान को प्राप्त कर लेता है सहजता के साथ। आज भी मैं जब भी उन रास्तों से होकर गुजरता हूँ तो सुबह—सवेरे विश्वास को देखकर उससे कुछ सीख लेता हूँ। वहीं शाम को विश्वास की आँखों की चमक और मुस्कान दोनों को साथ देखकर, ईश्वर का इशारा भी समझने की कोशिश करता हूँ और बढ़ जाता हूँ अपने संघर्षों की ओर।

वक्त हमेशा मेहरबान नहीं होता।

किसकी जिन्दगी में इम्तिहान नहीं होता।

विश्वास हासिल हो, तो हर मंजिल आसान है।

संघर्षों में मुस्कुराना इतना आसान नहीं होता।।



नज़्म

सुशील कुमार देवली
वरिष्ठ लेखाधिकारी



एक अखबार के हवाले से
खबर छपी थी कि
जंगल दुनिया भर के
आग लगने से दो चार हैं....
अखबार आगे लिख रहा था....
जंगल सारे वेन्टिलेटर....
पर ऑक्सीजन सपोर्ट पर हैं.....



सोचता हूँ

राजेश अधिकारी
वाह्यस्रोत कर्मी



सोचता हूँ कि क्या कमी रह गई
क्या जितना था वो काफी न था ।
नहीं समझ पाया तो समझा दिया होता
या जितना समझ पाया वो काफी न था ।
शिकायत थी तुम्हारी कि तुम जताते नहीं,
प्यार है तो कभी जमाने को बताते क्यों नहीं ।
अरे मुहब्बत की क्या मैं नुमाइश करता,
मेरी आँखों में जितना तुम्हें नजर आया,
क्या वो काफी न था ।।
सोचता हूँ कि क्या कमी रह गई,
क्या जितना था वो काफी नहीं था ।

मकड़जाल

डॉ० दिनेश शर्मा
सहायक लेखाधिकारी



जीवन क्या?

एक मकड़जाल ।

जाल बुनने की उधेड़बुन,
किसी को फांसने की जद्दोजहद,
इन प्रपंचों के पीछे मुँह बाए खड़ा है,
इस छोटे से पेट का बड़ा सवाल ।।

जीवन क्या?

एक मकड़जाल ।।

किसी के लिए छूटने की कसमसाहट,
नजदीक आती शिकारी की सरसराहट,
भारी संकट से कैसे निपटें,
जितना भागें, उतना लिपटें,
महीन धागों में पांव नहीं,
उलझी हैं साँसें,
दूर कहीं हँस रहा है काल,
जीवन क्या?

एक मकड़जाल ।।

कहीं प्रत्यक्ष तो कहीं कल्पना या सपने में,
कभी दूसरे के जाल में तो कभी खुद ही अपने में,
फँसना, फँसाना,
शिकार करना या
खुद शिकार हो जाना,
जाल में निरन्तर,
नाचना ही नियति हम सबकी,
कहीं दूर से नियन्ता दे रहा ताल,
जीवन क्या? एक मकड़जाल ।



हिन्दी का इतिहास एवं वर्तमान परिदृश्य

अरविन्द सिंह रावत
लेखाकार



ईश्वर के बनाये इस जगत में जितने भी प्राणी जन्म लेते हैं उन्हें ईश्वर की ओर से एक नायाब तोहफा दिया गया है मुँह, जिससे वे भोजन तो ग्रहण करते ही हैं किंतु इसके अलावा अपने भावों को व्यक्त करने हेतु एक माध्यम भी है चाहे वे भाव करुणा के हों या उत्साह के या अन्य जो भी भाव हों वे उसे अपनी वाणी से व्यक्त करते हैं। समस्त प्राणी जगत में एकमात्र मनुष्य ही ऐसा प्राणी है, जो अपने भावों को व्यक्त करने के साथ-साथ उन्हें मुख वाणी से बोलकर व्यक्त कर सकता है और इसमें उसकी सबसे बड़ी सहायक होती है उसकी भाषा।

विश्व में अनेक प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं यदि भारत के परिदृश्य में बात करें तो भारत में भी कई प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं, जो कि अलग-अलग भागों में बोली जाती हैं। यदि हम हिन्दी भाषा की बात करें तो हम पाते हैं कि भारत जैसे विशाल देश के एक बड़े भू-भाग में हिन्दी भाषा को बोलने एवं जानने वाले लोग रहते हैं एवं वे अपने दैनिक जीवन में हिन्दी का प्रयोग अपने जन-सम्पर्क, कामकाज और साहित्य सर्जन आदि कार्यों के लिए करते हैं, फिर भी हिन्दी भाषा का विकास उतना नहीं हो पाया है जितना होना चाहिए था।

हम जानते हैं कि हमारे भारतीय संविधान में अनुच्छेद-343 के अनुसार हिन्दी हमारी राजभाषा है, इसी तरह अलग-अलग राज्यों की राजकीय भाषा अलग-अलग है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में कोई एक भाषा थोपना सही नहीं है। इसी कारण से हमारे संविधान निर्माताओं ने हमारी राष्ट्रीय भाषा का दर्जा किसी एक भाषा को नहीं दिया, जबकि हिन्दी एकमात्र ऐसी भाषा है जो भारत के सर्वाधिक राज्यों में एवं बहुल भू-भाग को आच्छादित करती है और ऐसे लोगों की संख्या का प्रतिशत भी अधिक है।

किसी भी देश की भाषा उस देश के लोगों को परस्पर जोड़ने का एक उत्कृष्ट माध्यम होती है। भारत जैसे देश में, जहाँ कदम-कदम पर भौगोलिक परिस्थितियाँ, संस्कृति, भाषा-बोली बदलती रहती हैं, वहाँ सभी प्रकार के लोगों को आपस में जोड़ने का काम कर सकने वाली भाषा के रूप में हिन्दी सर्वोत्तम विकल्प है। यही तो एकमात्र भाषा है जो कि न सिर्फ भारत में ही बल्कि पूरे विश्व में सर्वाधिक लोगों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली भाषाओं में से एक है। भारत में जहाँ हर राज्य की अपनी भाषा या बोली है एवं लोग अपनी भाषा के आधार पर विभाजित हैं, उन्हें आपस में जोड़ने के लिए एक सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी भाषा ही सर्वोत्तम विकल्प हो सकता है।

अब समय आ गया है कि हमें इस ओर ध्यान देना चाहिए कि किस प्रकार हिन्दी भाषा का विकास हो। ऐसा सिर्फ यह सोचने भर से नहीं होगा कि हिन्दी मात्र एक भाषा है, अपितु हमें अपने देश के विकास से इसे जोड़ना होगा। जब किसी देश की एक उभयनिष्ठ भाषा होती है तो सबसे पहले तो वहाँ के लोग आपस में उस एक भाषा द्वारा परस्पर जुड़ जाते हैं, उनमें एकता का भाव उत्पन्न होता है और भाषा के नाम पर बँटवारा, घृणा आदि भाव मिट जाते हैं। दूसरा जब भाषा एक हो और उसे जानने वाले भी एक हों तो यह देश के विकास में भी अपनी भूमिका निभाता है। जैसे – पर्यटन जैसे उद्योग में किसी भी राज्य के व्यक्ति को दूसरे राज्य में सम्पर्क की दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ता और देश के किसी भी राज्य का कोई भी व्यक्ति देश में कहीं भी बिना किसी दिक्कत एवं परेशानी के पूरे अपनत्व के साथ आ-जा सकता है। यह देश के विकास में एक प्रभावशाली कदम है। ऐसे ही अनेक तर्क हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि एक भाषा न होने से उत्पन्न होने वाली दिक्कतें एक भाषा होने से सरलता से दूर हो सकती हैं एवं ऐसी भाषा देश के विकास में सहयोगी हो सकती है।

यदि बात करें वर्तमान परिदृश्य की तो हम पाते हैं कि हिन्दी के विकास की दिशा में हमारी सरकारों द्वारा विभिन्न प्रयास किये जा रहे हैं जिनसे हिन्दी का विस्तार हो रहा है। आज हम देख पा रहे हैं कि देश के बड़े-बड़े पदों पर आसीन लोग अपने साक्षात्कार हिन्दी में दे रहे हैं और विदेशी दौरो में भी हिन्दी भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। इससे हिन्दी को विश्व पटल पर भी एक पहचान मिलती है और ज्यादा से ज्यादा हिन्दीभाषी लोग जुड़ पाते हैं। साथ ही साथ हिन्दी के विकास को बढ़ावा मिलता है। लोग अपनी भाषा को लेकर सहज एवं गौरवान्वित महसूस करते हैं एवं किसी अन्य भाषा के पीछे भागने के बजाए अपनी भाषा पर केन्द्रित होते हैं। वे सभी समझ रहे हैं कि वे एक ऐसी भाषा को जानते हैं जो विश्व पटल पर अपनी एक पहचान रखती है। इन्हीं प्रयासों का सुफल है जो हमें हिन्दी भाषा में नई-नई रचनाएँ देखने को मिल रही हैं। यह हिन्दी के विस्तार एवं विकास में सहयोगी हैं।

अतः निष्कर्ष निकलता है कि हमें हिन्दी भाषा को और आगे बढ़ाने हेतु अपनी भूमिका को निरन्तर बढ़ाना होगा ताकि हिन्दी हमारे देश में ही नहीं अपितु विश्व में जनसम्पर्क की एक भाषा (अंग्रेजी की तरह) के रूप में विकसित हो सके एवं विश्व पटल पर अपनी एक अलग पहचान बनाए रखने में सफल हो। अब तक जितने भी प्रयोग हिन्दी के उत्थान के लिए किये गये हैं, उनसे आगे बढ़ते हुए कुछ और ठोस प्रयास करने होंगे। तभी हिन्दी भाषा विकास को प्राप्त करने के साथ पूरे भारत को एकता की डोर में बाँधने का भी कार्य करेगी और विश्व पटल पर देश को गौरवान्वित कर सकेगी।



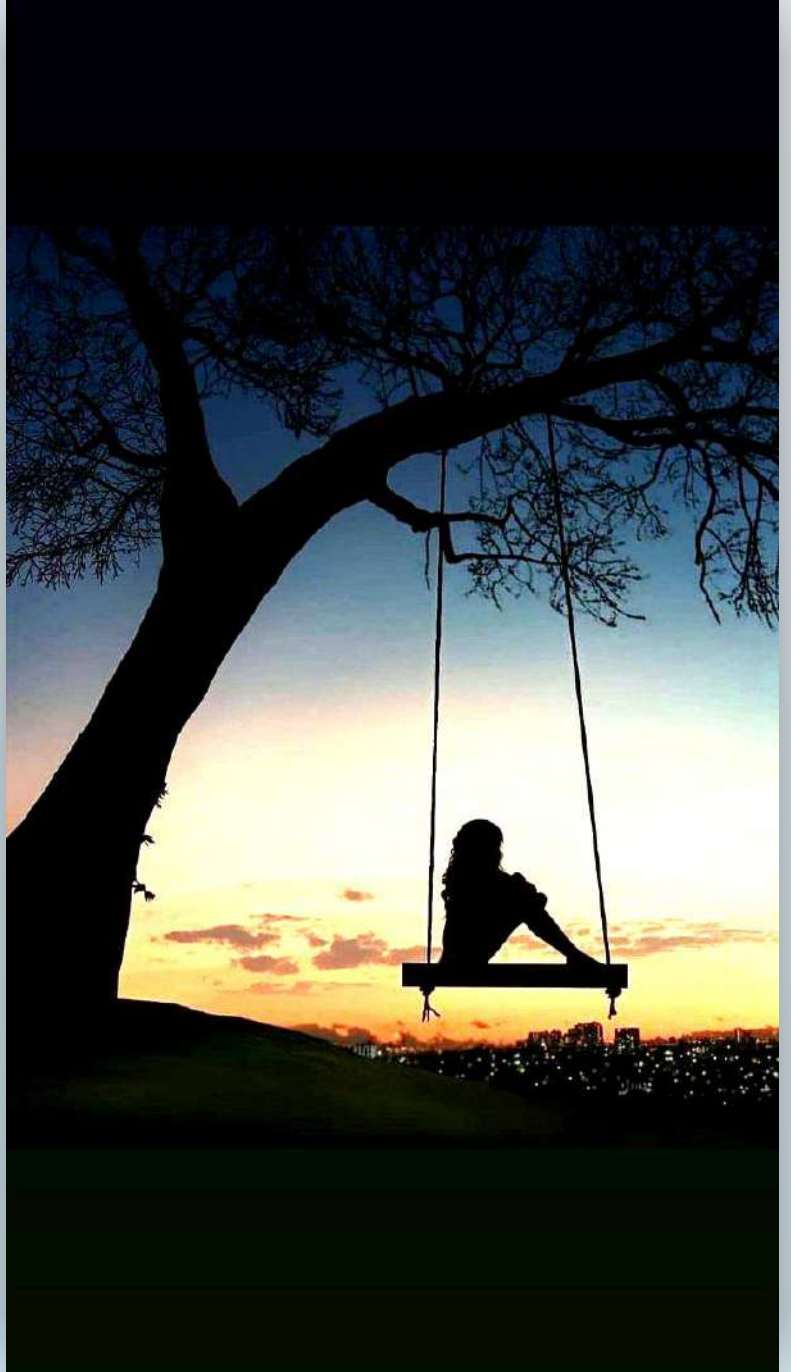
तन्हा

प्रशान्त जोशी
वरिष्ठ लेखाकार



हम ताउम्र से दर्द सह रहे हैं,
तेरे होने पर भी तन्हा रह रहे हैं।
गलतियों का अहसास होने पर लगता है,
तुमको दर्द देकर भी दर्द सह रहे हैं।।

पास होकर भी खुद को दूर पाया,
उजाला होने पर भी अँधेरा छाया।
अब जिन्दगी का दर्द सहा नहीं जाता,
एक आहट से मन बेचैन हो जाता।
गलतियों को बयाँ कर देना चाहता हूँ,
इस घुटन में अब और जिया नहीं जाता।।



पानी की बूँद-सी



श्रीमती पूजा त्रिपाठी
पत्नी श्री नवीन त्रिपाठी, स0ले0अ0

पानी की बूँद-सी होती हैं किताबें,
बस थोड़ा सा प्यार, धैर्य और समय ही तो मांगती हैं किताबें ।
जीवन का दर्पण, ज्ञान का सागर,
समस्या का समाधान, जीवन का सार,
अकेलेपन का साथी, शब्दों का भंडार ।
बिना दुष्परिणाम साथ निभाती जीवनभर,
बस थोड़ा-सा ही तो प्यार मांगती हैं किताबें ॥

विचार, निर्णय, भाषा, तथ्य, मूल्य, दिग्दर्शक, एकाग्रता,
हर रंग में रँगी, सबका परिचय कराती,
गुणात्मक, भावनात्मक, रचनात्मक और
सामाजिक समरसता का विकास कराती,
इतिहास से जोड़ती, आज-कल में जीती
बिना शर्त सदियों तक साथ निभाती,
बस थोड़ा सा ही तो प्यार मांगती हैं किताबें ॥

यह स्वीकृति परिवर्तन और सृजन की,
प्रेरणा गतिशील तन और तनावरहित मन की,
निरन्तर व्यक्तित्व निखारती,
चार्जिंग, नेटवर्क रहित एक मोमबत्ती में साथ देती,
मोरपंखी रख जीवन सुरभित करती,
बस थोड़ा-सा ही तो प्यार मांगती हैं किताबें ॥
पानी की बूँद-सी होती हैं किताबें,
बस थोड़ा-सा प्यार, धैर्य और समय ही तो मांगती हैं किताबें ॥



आशियाना

संजीव जखमोला
सहायक पर्यवेक्षक



आशियानों के दरवाजे जब से बनाये हैं मैंने।
परिंदे बहुत से आने लगे हैं॥
दाना डालकर उनको मैं अपने आशियाने के लिए दुआ करता हूँ।
वो ढूँढते हैं मेरे दरवाजों में अपना घरोंदा॥
गौर से देखा है तो दरवाजों पर कुछ दरारें सी हैं।
परिन्दों की बेबसी का सबब समझ में आया है॥
आँगन में एक पौधा मैंने लगाया है।
सींच कर फिर से दरख्त बनाया है॥
फिर से बहुत से परिन्दों का शोर है मेरी छत पर।
परिन्दे दाना चुग कर उड़ जाते हैं उसी दरख्त पर, अपने घरोंदों में॥
मेरे दरवाजों में भी दरारें दिखाई नहीं देती॥



गजल.....

सुशील कुमार देवली
वरिष्ठ लेखाधिकारी



समझा था जिसे अपनी जिंदगी सा ।।
शख्स वही निकला बाद में मतलबी सा ।।
खूँ के रिश्ते खूँ से लबरेज हैं,
अपना खूँ भी लगता है अजनबी सा ।।
जानवर से ज्यादा अक्लमंद है आदमी,
फिर भी आदमी दिखता नहीं आदमी सा ।।
खंजर की नोक उतनी चुभती नहीं जब,
वो अल्फाज जो लगे छुरी सा ।।
हिन्दोस्तां मुझ में दिखता नहीं अब,
सब कुछ दिखता है मुझमें विलायती सा ।।
फिर से मेरी थाली में उतर आया वो,
चमकता चाँद जो मुझे लगा रोटी सा ।।



पाप से मुक्त करा देती है माँ गंगा

बृज भूषण सेमवाल,
वरिष्ठ लेखाकार



पौराणिक काल में हरिद्वार को मायापुरी कहा जाता था। गंगाद्वार, तपोवन एवं कपिल स्थान भी हरिद्वार के ही नाम हैं। यहीं से देवभूमि उत्तराखण्ड स्वर्गमयी और तीर्थों का प्रवेशद्वार है। इसे स्वर्गद्वार भी कहा जाता है। भगवान श्री बद्री नारायण की यात्रा का आरम्भ इसी स्थान से होता है। उनके हरि नाम से ही इस स्थान के नाम को हरिद्वार कहा जाता है। भोले शिव शंकर के परमधाम केदारनाथ की यात्रा भी यहीं से आरम्भ होती है। शिवजी के हर नाम से इस स्थान को हरद्वार भी कहा जाता है। गौमुख (गंगोत्री) से निकलने के बाद माँ गंगा जी हरिद्वार में आकर पहली बार मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करती है। कहा जाता है कि राजा भगीरथ के पूर्वज राजा सगर के साठ हजार पुत्रों की मृत्यु के बाद जब उनका उद्धार नहीं हो पा रहा था, उस समय अपने पूर्वजों के उद्धार के लिए राजा भगीरथ जी ने माँ गंगा जी को धरती पर लाने के लिए कठोर तप किया था।

भगीरथ जी ने सर्वप्रथम ब्रह्माजी को प्रसन्न करने के लिए तप किया था। जब ब्रह्मा प्रकट हुए तो उन्होंने वरदान मांगने के लिए कहा। तब भगीरथ ने कहा कि मेरे पूर्वजों के उद्धार के लिए मैं माँ गंगा जी को धरती पर लाना चाहता हूँ, जिससे उन्हें मुक्ति मिल सके। तब ब्रह्मा ने वरदान दिया और कहा कि जब गंगा धरती पर उतरेगी तो गंगा की धारा धरती को भेदकर पाताल में चली जायेगी इसलिए आप शिवजी की तपस्या करो और उन्हें प्रसन्न करो। वे माँ गंगा जी को अपनी जटाओं में स्थान देंगे तो उनका वेग कम होगा और वह धरती पर आ सकेंगी।

तब भगीरथ ने भोलेनाथ जी की तपस्या की और तपस्या से प्रसन्न होकर शिवजी ने भगीरथ के कथनानुसार अपनी जटाओं में माँ गंगा जी को स्थान दिया, जिसके बाद माँ गंगा धरती पर आयीं और सगर पुत्रों का उद्धार किया। तब से आज तक माँ गंगा हरिद्वार नगरी में कल-कल निर्मल अमृत की तरह बह रही है। जो मनुष्य माँ गंगा जी के पवित्र जल में स्नान करता है उसके सभी पाप मुक्त हो जाते हैं। वह पुण्य का भागीदार बन जाता है। वह इस मोह माया, जीवनकाल से मुक्त होकर स्वर्ग की ओर प्रस्थान करता है। उसे बार-बार इस मृत्युलोक में नहीं आना पड़ता है, इसलिए तीर्थयात्री, श्रद्धालु, भक्त आदि सभी इस पवित्र नदी में स्नान करते हैं। गंगाजल को अपने घर लाते हैं। उसी जल से अपने इष्टदेवों को भी स्नान कराते हैं, जिससे उनकी मनोकामनाएं पूर्ण हो सकें।



करम

प्रशान्त जोशी
वरिष्ठ लेखाकार



ए खुदा अपने बन्दों पर कुछ तो करम करो ।
गरीब और असहायों पर कुछ तो रहम करो ।।
यह सब तुम्हारी दया की आस में बैठे हैं ।
जीवन में कभी भी परिवर्तित होना है,
यह सब इस उल्लास में बैठे हैं ।।
भाग्य का लेखा या कर्मों का फल,
जीवन में अच्छे दिन भी आयेंगे,
आज नहीं तो निश्चित कल ।।



आज कुछ ऐसा करो...



शिवम् सिंह
खण्डीय लेखाधिकारी-II

आज कुछ ऐसा करो,
पवन का वेग रुक जाए,
स्वतः धरा झुक जाए,
सलिल धारा स्थिर हो,
पावक का तेज थम जाए।

रुक जाए विस्तार व्योम का,
थम जाये चक्र सूर्य सोम का,
नग की उच्चता कम हो,
हो तू अवतार प्रेम का।

क्षितिज नष्ट हो जाये,
व्याधियां रुष्ट हो जायें,
अग्नि का ताप शीतल हो,
अवरोध अस्त हो जायें।

सूर्य अपना प्रकाश छोड़ दे,
तारे अपनी दिशा मोड़ दें,
संघर्षों के इतिहास में तू
एक नया अध्याय जोड़ दे।
आज कुछ ऐसा करो...



वो घर जो पीछे छूट गया

प्रभात कुमार द्विवेदी
खंडीय लेखाकार



आज शाम ही दिगम्बर को निकलना था। वह अपना सारा सामान व्यवस्थित ढंग से बाँधने में लगा था। कभी वह बड़े बैगों में पहले से रखी हुई चीजों को व्यवस्थित करता, तो कभी पीछे वाले कमरे से और सामान लाकर बैग में जमाता। आज से ठीक एक वर्ष एक महीने और छह दिन पहले वह इस किराये के घर में आया था। घर अल्मोड़ा शहर के पहाड़ की ढाल पर मुख्य सड़क से कुछ 80-90 सीढ़ियाँ उतरकर नीचे की ओर था।

दिगम्बर के आने से पहले इस घर में प्रायः अन्धकार ही रहता था। मुख्य सड़क से काफी दूर होने से यहाँ सन्नाटे ने शोर का स्थान ले लिया था। यत्र-तत्र मकड़जाल, चीटियों के मिट्टी के घर थे तथा फर्श पर धूल की समतल चादर फैली थी। मकड़ियाँ भी अधिकांश जालों को छोड़कर जा चुकी थीं। चीटियों के मिट्टी के घर बीटल्स आश्रम की खाली पड़ी कोठरियों की तरह वीरान थे। प्रायः उस घर की दीवारें, खिड़की-दरवाजे और फर्श आपस में बातें करते कि क्या कभी यहाँ उजाला होगा? क्या हम कभी एक दूसरे को ढंग से देख पाएंगे? क्या कभी उपेक्षित हो जाने की ये पीड़ा हमारी तेजी से घटती उम्र को रोककर हमें नवयौवन प्रदान करेगी? क्या हम इतने भी सक्षम नहीं कि अपेक्षाकृत निम्नतर समझे जाने वाले जीवों को आश्रय दे सकें? वस्तुतः किसी के काम न आ पाने की पीड़ा कठोर से कठोर हृदय को भले झकझोरती न हो पर कम्पित अवश्य कर देती है।

अब जबकि घर के ये सारे सदस्य इस दर्द को जीवन का हिस्सा मानकर इसके साथ रहना सीख गए थे तब इस घर के दरवाजे पर पहली बार आहट सुनाई दी। ऐसा लगा कोई भारी भरकम चीजों को ऊपर सड़क से नीचे ला लाकर रख रहा है। घर के उन मृतप्राय सदस्यों में नवजीवन का संचार हुआ। वे इस आशा से भर गए कि अब कोई दरवाजे को खोलेगा और प्रकाश एक बाढ़ की तरह अन्धकार को बहाकर बाहर कर देगा। उस प्रकाश में दरवाजे, खिड़कियाँ, दीवारें, फर्श ये सब एक दूसरे को देख पाएंगे। परिणाम आशा के अनुरूप रहा, घर में प्रवेश हुआ एक शख्स का, नाम था— दिगम्बर।

दिगम्बर अविवाहित था, यही खिड़कियाँ, दरवाजे, फर्श व दीवारें उसके नए मित्र बन गए थे। दिगम्बर और घर के ये अन्य सदस्य खुशी-खुशी रहने लगे। अब घर में बहुत चहल-पहल रहती, हवा के झोंकों से कभी खिड़कियाँ नाचतीं तो कभी दरवाजे धूप के साथ आँख-मिचौली खेलते। फर्श हर रोज सुबह धोकर तैयार रहता। केवल वे ही जाले बचे जिन्हें मकड़ियों ने हाल ही में बनाया था और वे उनमें रहती भी थीं। चीटियों ने गुप्त स्थानों पर अपने मिट्टी के घर बनाकर आना-जाना शुरू कर दिया था। छिपकलियाँ, झींगुर, कीट-पतंगे भी मेहमान बनकर अक्सर आने-जाने लगे। खुशियों से घर भर जाना यह कहावत मूर्त रूप ले रही थी।

वर्ष बीता, महीना बीता और बीते चार दिन। दिगम्बर आज कुछ परेशान सा लग रहा था। उसके हाथ में एक खाली लिफाफा और सफेद कागज का एक पन्ना था। वह उस पन्ने को पढ़ने का बहाना किये काफी देर से सर झुकाए बैठा था। उसकी बेचैनी को घर के अन्य सदस्यों ने भाँप लिया और शायद उनकी मौन पुकार की तीव्रता इतनी अधिक थी कि दिगम्बर ज्यादा देर इनसे नजरें मिलाए बिना न रह सका। उसने जब सर ऊपर उठाया तो उसकी आँखों में आँसू थे। उसने दरवाजों, खिड़की, फर्श व दीवारों व अन्य सदस्यों को एक ही नजर में भर लिया। वह चुप रहना चाहता था पर उसकी बेचैनी का कारण जानने की इन सभी की उत्सुकता ने उसे बोलने पर मजबूर कर दिया। बहुत साहस जुटाकर उसने बोलने की कोशिश की तो उसके मुँह से बड़ी मुश्किल से एक ही वाक्य निकला कि—

“मेरा ट्रांसफर हो गया है, परसों मुझे जाना है”

फूल.....



विक्रान्त कुमार
सहायक लेखाधिकारी

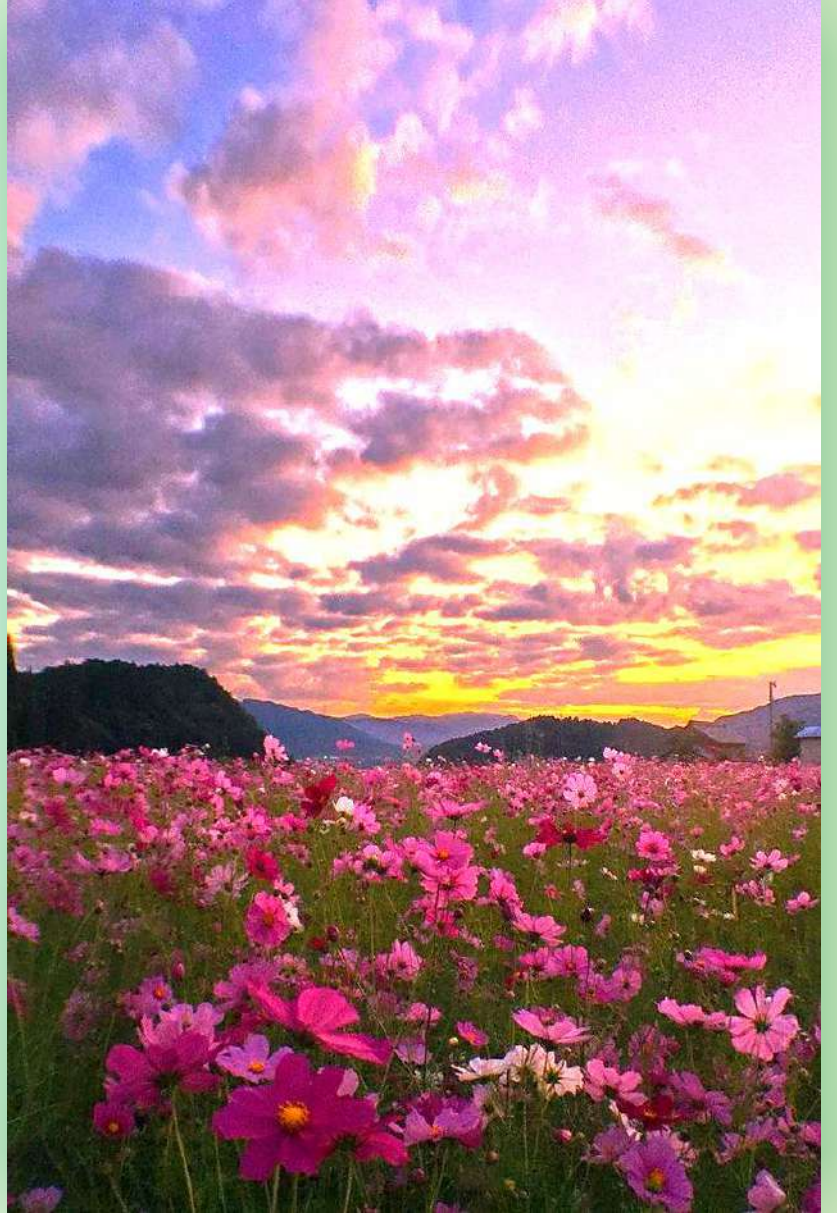
मैं एक फूल.....

कभी सजा हूँ आरती थाल,
कभी बना अर्थी की झाल,
कभी माथे की सोभन,
कभी चरणों की धूल,
मैं एक फूल ।

गंगा मिले मुझे कभी तो,
जमुना भी मिल जाती है,
कभी सजा गजरे में,
कभी चढ़ा शिव त्रिशूल,
मैं एक फूल ।

बन रंगोली आँगन आया,
त्योहारों में भी खूब हूँ भाया,
महक गया माथे पर,
कभी चुभा हूँ बनकर शूल
मैं एक फूल ।

पूर्ण काज पर फेंका जाता,
फिर किसी को मैं रास नहीं आता,
थक—हार धरती में समाता,
फिर उपजूँ बनकर नवफूल,
मैं एक फूल...



मिटु

पूनम शर्मा
हिंदी अधिकारी



किसी जरूरी काम से देहरादून से गाज़ियाबाद जाना था। दो दिन पहले ही शाम को 5 बजे वाली शताब्दी में टिकिट करवाई थी, जो शायद वेटिंग लिस्ट में 43वीं थी। खैर, यात्रा वाले दिन सीट कन्फर्म हो गई और मैं ऑफिस पूरा करके स्टेशन के लिए निकल पड़ी। सीट पर बैठ गई और स्वयं को व्यवस्थित करने के प्रयासों में लग गई। चूँकि बच्चों की गर्मियों की छुट्टियाँ चल रही थीं तो स्वाभाविक था कि लगभग हर दूसरे यात्री के साथ एक बच्चा अवश्य यात्रा कर रहा था। मेरा बेटा भी मेरे साथ ही था। मजाक-मजाक में बगल वाली सीट पर बैठी मेरी सहयात्री ने कह भी दिया था कि आज तो ये लग ही नहीं रहा है कि हम रेल यात्रा कर रहे हैं। मुझे तो ऐसा आभास हो रहा है जैसे मैं किसी प्ले स्कूल या फिर डे केयर में आ गई हूँ। चारों तरफ बच्चों की चिल्लम-चिल्ली जो थी।

लेकिन ध्यान देने वाली बात यह थी कि इतनी आवाजों में भी दो-तीन आवाजें ऐसी थीं जिन पर लगातार न चाहते हुए भी मेरा ध्यान जा रहा था। एक महिला जो शायद 50-55 की रही होगी वो एक अन्य महिला यात्री से बहुत ही ऊँचे स्वर में बात कर रही थी और लगभग इतने ही ऊँची आवाज में वो उस महिला यात्री की गोद में बैठी छोटी बच्ची से भी बातें बना रही थी। शायद बच्ची को बहलाने के लिए यही एकमात्र विकल्प रहा होगा उसके पास। शाम के 4.55 हो चुके थे, पाँच मिनट बाद ट्रेन के छूटने का समय होने वाला था। वो अधेड़ उम्र महिला त्वरित गति से ट्रेन से उतरने लगी और उतरते हुए उसने दूसरी महिला, जिससे वो पिछले आधे घण्टे से वार्तालाप कर रही थी, उससे एक अजीब-सा प्रश्न किया। मेरी समझ से इस प्रश्न को अजीब ही कहा जा सकता है। “आरती, बाकी सब तो ठीक है लेकिन तुम लोग बाथरूम कैसे जाओगे?” बाथरूम कैसे जाओगे... ये कैसा प्रश्न हुआ भला। जैसे सब जाते हैं वैसे ही जायेंगे और कैसे? मैंने मन ही मन उस महिला को उत्तर दे दिया। लेकिन मेरा आश्चर्य तब बढ़ गया जब मैंने दूसरी महिला का उत्तर सुना। आप चिन्ता मत कीजिये, मैं और सुनील दोनों एक साथ ही बाथरूम चले जायेंगे और मिटु को भी ले जायेंगे। उस प्यारी सी बच्ची का नाम मिटु था, इतना तो मैं जान चुकी थी।

चूँकि अभी तक मैं वास्तविकता से अनभिज्ञ थी तो स्वाभाविक ही था कि महिला के इस उत्तर से मेरे चेहरे पर एक भीनी-सी मुस्कान फैल गई। ट्रेन चल पड़ी, मैंने भी चैन की साँस लेते हुए गाने सुनने के लिए ईयरफोन निकाल लिया। उधर हमारे कोच में बच्चों का शोर भी कुछ कम हो चला था। कुछ बच्चों को आज के रीति-रिवाज के हिसाब से हाथों में फोन थमा दिए गए थे तो कुछ चॉकलेट, चिप्स आदि को निपटाने में व्यस्त थे और शेष शायद नींद की झपकियों का आनन्द उठा रहे थे। लेकिन आश्चर्य की बात तो यह थी कि वो मिटू-मिटू का स्वर लगातार मेरे कानों से होकर, दिमाग तक एक अजीब-सी उत्सुकता जगा रहा था।

हालांकि मेरा अपनी सीट छोड़कर किसी भी सहयात्री से यह प्रश्न करना कि बच्ची के साथ क्या समस्या है या वो चुप क्यों नहीं हो रही है आदि सामाजिक अनुशासन की परिधि लाँघने जैसा होता। परन्तु मैंने अपने हृदय की बात सुनी और मैंने उस दम्पति के पास जाकर उनसे बच्ची के लगातार रोने का कारण पूछ ही लिया। उसके पिताजी ने बताया कि बच्ची खिड़की पर जाना चाहती है। मैंने कहा कि आप खिड़की की तरफ बैठकर उसको गोद में ले लीजिये। उन्होंने मेरी बात को बीच में काटते हुए तपाक से जवाब दिया “मैडम, बच्ची खिड़की पर नहीं ट्रेन के दरवाजे पर जाने की जिद कर रही है। मैंने उन्हें फिर से समझाने का प्रयास किया कि यदि बच्ची की यही इच्छा है तो थोड़ी देर के लिए बच्ची को गोद में लेकर दरवाजे पर खड़े हो जाइए, बच्ची का मन बहल जाएगा। मेरे उनसे संवाद करने के दौरान जिस बात ने मेरा ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया वो यह थी कि वो सज्जन बात तो मुझसे कर रहे थे लेकिन उनकी दृष्टि कहीं और ही थी। मुझे लगा वह शायद सकुचा रहे होंगे बात करने में।

खैर, उन्होंने मेरी बात मान ली और थोड़ी देर के लिए पति-पत्नी दोनों बच्ची को लेकर ट्रेन के दरवाजे के पास चले गए। बच्ची लगभग गुलाब के फूल की तरह खिलखिला उठी। मानो उसे विश्व की सबसे अनमोल धरोहर मिल गयी हो। मुझे भी मानसिक शान्ति का अनुभव हुआ। कुछ ही पल व्यतीत हुए होंगे कि फिर से मेरे कानों में वही मिटू-मिटू की आवाज पड़ी। मिटू, ठीक से बैठो, मिटू, ये मत खाओ, उधर मत बैठो, भागो मत, सो जाओ आदि इत्यादि। परन्तु उन स्वरों का जो स्वर था वह ट्रेन में बैठे लगभग सभी यात्रियों की तुलना में ऊँचा ही था। मुझे यकीन हो चला था कि आज की ये यात्रा मेरी मानसिक शान्ति को भंग करने में पूर्णतः सफल थी। ऐसा लग रहा था कि कब मेरा स्टेशन आये और मैं इस ट्रेन से उतरूँ। तभी अचानक से मेरी नजर उसी दम्पति पर पड़ी जब वे बाथरूम जाने के लिए साथ चल पड़े। मैंने पाया कि मिटू के पिताजी का केवल एक ही हाथ था, जिससे वे बड़ी कठिनाई लेकिन एक मजबूत पकड़ के साथ मिटू को जकड़े हुए थे। बाथरूम तक जाने के लिए उस दम्पति ने लगभग दस मिनट का समय लिया जो कि सामान्य लोगों की तुलना में लगभग दुगना था। ट्रेन सहारनपुर रेलवे स्टेशन से आगे बढ़ी। यात्रियों को भोजन परोसा गया। फिर से मेरा ध्यान उसी दम्पति की तरफ गया। जैसे ही अन्य यात्रियों ने भोजन आरम्भ किया, धड़ाम की आवाज से सभी सन्न रह गए। मिटू की माताजी ने थाली गिरा दी थी या शायद ये कहना ठीक रहेगा कि उनसे गलती से थाली गिर गयी थी।

नहीं, न तो गलती से गिरी थी और ना ही मिटू की ये कोई शरारत ही थी। थाली को ठीक से पकड़ा तो जा ही सकता था, ऐसी भी क्या असावधानी? नहीं, ऐसा कोई कारण नहीं था। असल कारण जानने पर मेरे हृदय की विकलता का कोई पार नहीं था। मिटू की माताजी देख नहीं सकती थीं। मैं इसका क्या अर्थ निकालती या शायद जानबूझकर वो अर्थ नहीं निकालना चाहती थी जो मुझे हृदयविदारक सत्य की तरफ ले जाता और वो सत्य था कि मिटू की माँ दृष्टिबाधित थी। लगभग तीन घण्टे का सफर पूरा हो चुका था और मुझे आभास भी नहीं हुआ कि मिटू की माँ खुली आँखों से देख नहीं सकती थी। मैं सन्न रह गई। इतनी देर से वो महिला जितने आत्मविश्वास के साथ सहयात्रियों से बात कर रही थी, अपनी बच्ची को सँभाल रही थी, उसे खाना खिला रही थी, उसे फोन पर वीडियो चला कर दे रही थी, वह खुद देख पाने में असमर्थ थी, पूर्णतया असमर्थ। ये कैसे सम्भव था? आज की इस यात्रा को ईश्वर ने मेरे लिए आश्चर्यों से भर दिया था। लेकिन अभी आश्चर्यों की सीमा समाप्त नहीं हुई थी। अभी तो सबसे बड़ा आश्चर्य मेरे सामने आने वाला था। जब खाने की थाली फिर से उस दम्पति को दी गई तो महिला ने अपने पति से आग्रह किया कि आप मुझे पहले खा लेने दीजिये, मैं चख लूँगी तो मिटू को धीरे-धीरे खिलाती रहूँगी। मिटू के पिताजी ने कहा कि ठीक है, लेकिन सब्जी है कौन सी? मैंने फिर से मन ही मन अपना उत्तर तैयार कर दिया—दिख तो रही है थाली में, मटर पनीर है। लेकिन मिटू की माताजी के उत्तर ने मुझे निरुत्तर ही कर दिया। वह बोली—देख पाते तो तुरन्त पता चल जाता, लेकिन झोंट वरी, मैं आपको खिलाती हूँ, पता चल जाएगा।

देख पाते तो पता चल जाता। मतलब? देख तो रहे ही थे न। वो पिछले तीन घण्टों से या फिर नहीं? क्या सच में नहीं देख पा रहे थे? क्या वो भी अपनी पत्नी की तरह ही? मुझे एक पल के लिए ऐसा लगा जैसे मुझे किसी ने ऊँची चट्टान से धक्का दे दिया हो और मेरा माथा फट गया हो। ये कैसे सम्भव था? माता-पिता की आँखों में जो प्रेम उमड़-उमड़ कर बाहर आ रहा था, उसमें तो कुछ भी दृष्टिबाधित नहीं था। जिन प्रयासों के साथ दोनों अपनी नन्ही कली का ध्यान रख रहे थे, उसमें तो दृष्टिबाधित होना कोई बाधा नहीं थी। जिस आत्मविश्वास के साथ वे सहयात्रियों से बिना किसी रुकावट के संवाद स्थापित कर रहे थे, वहाँ तो उनके नेत्रहीन होने का आभास किसी को नहीं हुआ था। जिस प्रकार वे एक दूसरे की लगभग प्रत्येक कार्य में हर सम्भव मदद करते आ रहे थे, उसमें नेत्रहीनता बाधा उत्पन्न नहीं कर रही थी।

परन्तु मेरे मस्तिष्क के इन आधारहीन विचारों से यथार्थ को बदल पाना असम्भव था और यथार्थ यह था कि मिटू की माँ की आँखों में सचमुच रोशनी नहीं थी, भले ही वो दिखती बहुत ही सुन्दर थी। सचमुच उसके पिताजी की आँखों से भी प्रकाश कोसों दूर था, दूर ही क्यूँ प्रकाश था ही नहीं। परन्तु इतना होने के बाद भी क्या उनके प्रेम का प्रकाश जो प्रतिपल अपनी लाड़ली पर उड़ेलता जा रहा था उसकी दुनिया की किसी भी प्रसन्नता से तुलना नहीं की जा सकती थी। माता-पिता की अपनी सन्तान के लिए प्रेम के प्रकाश की न तो कोई सीमा होती है और न ही उसे मापने के लिए हम जैसे साधारण लोगों के पास कोई मापदण्ड।

इस यात्रा से अगर कुछ सीख या समझ पाई तो वो यह था कि प्रेम केवल एक शब्दमात्र ही नहीं होता। माता-पिता का अपनी सन्तान के लिए प्रेम हो, पति-पत्नी का प्रेम हो, भाई-बहन का हो या मित्रों का। प्रेम तो अविरल गति से बहती चली जाने वाली नदी के सामान होता है जो किसी भी बाधा से अपने मार्ग को बाधित करने को तैयार नहीं होता। किसी भी प्रकार की थका-हरा देने वाली परिस्थितियों में भी प्रेम अपने लिए मार्ग खोज ही लेता है। मिटु के माता-पिता की परिस्थितियों को गम्भीरता से लिया जाए तो इतनी मुश्किलों में जीवन जीना सरल नहीं होता। परन्तु बच्ची के लिए उनके प्रेम ने उनके जीवन की सभी बाधाओं को पीछे छोड़ते हुए आगे बढ़ने का निर्णय लिया। सामान्यतः हम दिन-प्रतिदिन की छोटी-मोटी समस्याओं में उलझ कर रह जाते हैं, हतोत्साहित हो जाते हैं, कमजोर थके-हारे हुए महसूस करने लगते हैं। ऐसे में मिटु के माता-पिता हमारे लिए प्रेरणा स्रोत बन सकते हैं। समस्या बड़ी होती नहीं, हम उसे बड़ा बना देते हैं। समस्या के बारे में न सोचकर समाधान के बारे में सोचा जाए तो जीवन आनन्दित भाव से व्यतीत किया जा सकता है।



गुटरगूँ

शिवम् लिहौरी
लेखाकार



कुछ झीने-झीने से परदे हैं, मेरी शख्सियत की दीवारों पे। सरकाते जाओ और नये-नये किरदारों से राब्ता करते जाओ। मगर कब, कौन सा शख्स रूबरू होगा, ये भाई, हम भी नहीं बता सकते। जैसा रुख मिजाज का ठहरा उस वक्त, वैसा ही किरदार निकल के अपनी ही कोई इबारत लिख जायेगा, आपके मन पटल पे।

वैसे अपनी तो हर बार फरमाते हैं, अब कुछ उनकी बात कर लें। अब आप कहेंगे उनकी किनकी? अरे उन्हीं की, जिनपे पिछली कहानी में बम फटा था। बम नहीं दरअसल, एटम बम, हाँ एटम बम ही था। जिससे निकले विकिरण ने हमें और हमारी दोस्ती को भी झुलसा दिया था। मगर वो जिगरी यार ही कैसे जो लड़ के, मर के, दोबारा फिर गले न लगे। हम भी लगे गले। मगर गले बाद में लगे, पहले थोड़ा वक्त लगा।

कुछ हँसते-गाते से जो चेहरे थे, अब कुछ बुझे-बुझे से ठहरे थे। हम साथ ना थे, तो अलग भी न हुये थे। बातचीत बन्द थी बस। मगर दुनिया को कहाँ रास आता है। दुनिया को तो बस मजे लेना आता है। तो एक दिन फिर लिये मजे... दुनिया ने। हम कसीदे पढ़ते-पढ़ते वाह-वाही लूट रहे थे कि एक शख्स ने नुक्ताचीनी कर दी। शुरू हो गया, दफ्तर में छींटाकशी का दौर चालू। बात हद से तब बाहर हो गई, जब किसी ने हमारे और उनके सम्बन्धों पे ही फिक्रा कस दिया। चलो एक बार को हमारे सामने कसा होता, तो हम सहन कर लेते। मगर कहा भी किसके सामने, जिसके पहले से ही दिमागी पेंच कसे ना थे। ऐसे थोड़ी हमने उनका नाम चैंडी रखा था। दिमाग फिर तो चंडी ही सवार होती थी सर पर। ज्यादा दवाब बनाया गया, तो वो उठे और उस शख्स के गाल पे जड़ दिया एक कस के।

वैसे दोस्ती की दरार थी एक अदना सी मोहतरमा और उस दरार से बाहर झाँकते हमारे दिल। जब दरार ही न रही हो तो काहे का झगड़ा मियाँ। तो साहब, हुआ यूँ कि जिनके चक्कर में वो इतराये थे और जिनके चक्कर में हमने भी चक्कर खाये थे, वो तो निकल ली। अरे नहीं जनाब, ऊपर नहीं निकली। बस ऊँची तालीम हासिल करने के वास्ते, विदेश निकल ली और पीछे छोड़ गई दो कौवों का जोड़ा— एक हम और एक वो। वैसे सच कहें तो एक उम्मीद हमारे दिल में भी जगी थी कि हम और वो, दो हंसो का जोड़ा बन सकते हैं। मगर ना वो हमारी हुई और ना ही हम उनके हो पाये। एक टीस सी हमेशा चुभती थी कि हम दोस्त से दगा कर रहे हैं। सो हर बार की तरह जाने दिया, ये सोच कर कि जो हमारा होगा वो लौट के हमारे पास ही वापस आयेगा और जो ना आया तो फिर? फिर कहाँ हमारा था हुजूर।

हाँ, तो हुजूर कहाँ थे। हाँ, हाथापाई पर। तो जनाब, अब हाथापाई हो तो दोस्त ही बीच-बचाव करते हैं। सो हम भी कूद पड़े। चैंडी की उंगलियाँ उनके गाल पे छपी और उनकी हमारे गालों पे। खैर, रार को घटाना और मढ़ते को बढ़ाना कौन सी बड़ी बात है। किसी तरह लोगों ने बीच-बचाव करा के मामला शान्त कराया। मगर दोस्ती में चोट लगे तो दोस्त का कलेजा जले। सो जल गया इनका कलेजा भी, मन में अभी भी हमारे प्रति कहीं किसी कोने में कोई सहानुभूति दबी बैठी थी। ज़रा सा थप्पड़ी दबाव पड़ा और निकल आई बाहर हुँकारते हुये। वो दिन और आज का दिन— फिर मिल बैठे तीन यार। वो, हम और जॉनी वॉकर साहब!! अब बताने की ज़रूरत तो नहीं है, कौन से जॉनी वॉकर की बात हो रही है। जी, बहुत खूब, सही समझे। जाम से जाम टकराता है तो दिलों के बीच जो भी टकराव हो उसे मिटाता है। हम घूँट-दर-घूँट हलक से उतारते गये, गिले-शिकवे मिटाते गये, और दोस्ती की बुनियाद मज़बूत करते गये।

"चैंडी सुन" – हमने कुर्सी पे झूलते हुये कहा।

"बोलो"— हमारी गुहार को लगभग अनसुना करते हुये चैंडी ने कहा।

"भाई आरवी याद है?" हाथ में लिए पेन को टीचुक—टीचुक करते हुये और छत पर लगभग आरवी की 440 वोल्ट की मुस्कान वाली भोली सूरत सोचते हुये हमने पूछा।

"कौन आरवी?" – उसी शिद्दत से हमे नज़रअंदाज़ करते हुये और कंप्यूटर पर नज़रें गड़ाये हुये चैंडी ने वापस पूछा।

"अरे आरवी!... आरवी सिंगल!"— हमने ज़ोर देते हुये फिर से कहा।

"कौन आरवी सिंगल? वो एच आर डिपार्टमेंट वाली?" दाँतों में पेन दबाये और स्क्रीन पे टाइप करते हुये चैंडी ने कहा।

"ऊँह हूँ..."— खट्टे मूड के साथ नाक सिकोड़ते हुये हमने कहा।

"किसका नाम ले लिया। अरे, वो तो आरती डिंगल है—नकचढ़ी और खूसट। मैं तो आरवी... आरवी सिंगल की बात कर रहा था, भाई। अरे वो अपने कॉलेज... अरे अपने बैच वाली। अरे, वो जो आगे वाली बेंच पर बैठती थी और प्रोफेसर से सवाल करती थी।" याद दिलाने की भरपूर कोशिश थी हमारी।

"सवाल करती थी या पकाती थी... सीधे सीधे चश्मिश बोल ना।"— हमारी तरफ एक नज़र मार के चैंडी दोबारा कंप्यूटर पर काम करने लगा।

"अब नहीं पकाती..."— आँखों में चमक के साथ हमने कहा।

"बेशक, क्योंकि अब पकाने का ठेका आपने जो ले लिया है"— मज़ाकिया लहजे में उन्होंने बोला।

"मज़ाक नहीं करो"— हमने बोला ही था कि बीच में टोकते हुये वो बोले— "...और तुम्हे कैसे मालूम कि अब नहीं पकाती!! सुबह—सवेरे बड़ी याद आ रही है आज, आरवी की। कल रात सपने में मुलाकात हो गई क्या?"— खीसें निपोरते हुए उन्होंने कहा।

"अरे नहीं। प्लाइड में मिली थी त्रिवेंद्रम जाते हुये और क्या दिख रही थी, बला की खूबसूरत। बिल्कुल पहले वाली नहीं।"— ख्यालों में आरवी की शक्ल उभारते हुए हमने कहा।

"बोलते जाओ मैं सुन रहा हूँ" कंप्यूटर पे काम करते—करते अब चैंडी को हमारी बातों में दिलचस्पी बढ़ रही थी।

हम एक झटक के में घूमे और चैंडी की गोल चक्के वाली कुर्सी अपने तरफ घूमाते हुये बोले, तो सुनो—

और शुरू हुई हमारी किस्सागोई।

नज़र भी खूब कमाल चीज़ है। कोई नज़र आ जाये तो करार। किसी की नज़र लग जाये तो बेकरार। आलम ये है साहब, की नज़रों की गर कटार भी बनाई जाये तो अब्बल दर्जे की घातक हो जाये। एक ही वार में सीने के आर—पार। और दिल का हाल तो पूछो ही नहीं साहब। हमारे एक जाट मित्र की जुबानी कहे तो—"दिल तो इन्हे सांड की आँख सा लागे है। बोल्ले तो "बुल्लज़ आईज।"

तो जनाब ऐसे ही निगाही नशतर थे उनके और "बुल्लज़ आईज" बना हमारा बेचारा दिल। आज भी एक नज़र देख लें तो दिल छलनी हो जाये, हालांकि नज़र मिलाने की हिम्मत बची नहीं है उनमे अब। शायद नज़र मिलने से सच्चाई के नज़ारे झलक आते हों और सच्चाई से सामना करना हर किसी की बात नहीं।

वो दिन भी क्या दिन थे। बेजान दिल की चौखट पे दुबारा दस्तक देने आई थी बहार। ना—नुकुर करते—करते फिर से फँस गये उस भंवर में। वैसे सच्चाई कुछ और ही थी। अपने खालीपन को भरने को जिसकी तलाश में दर—दर भटक रहे थे, वो खुद अपनी नज़रों से हमारी तलाशी ले रही थी।

दिल्ली की गर्मी में हफ्ता कब बीत गया पता ही न चला। आ गया वो दिन जब हमें दो दिनों के लिये त्रिवेंद्रम, केरल, जाना था। सुबह—सुबह चार बजे कुछ ऊँघते हुये, तो कुछ जम्हाई लेते हुये, एयरपोर्ट पहुँचे। 'चेक इन' करके जहाज में हम दाखिल हुये और खूबसूरत एयरहोस्टसों के बीच से निकलते हुये अपनी सीट तक पहुँचें। बैग ऊपर लगा के बैठे और ज्यों ही बगल में बैठी मोहतरमा पे नज़र गयी, तो उछल गये हम अपनी सीट से और सर टकराया ऊपर रैक से।

"अरे, ज़रा संभल के..."— चौंक के वो लगभग चिल्लाते हुये, बोली।

सर को हथेली से रगड़ते हुये और दर्द को पीते हुये हमने कहा "अरे... आरवी तुम?"

फिर कुछ संभलते हुये और तहज़ीबी दायरों में लौटते हुये हमने कहा। "मेरा मतलब आरवी आप... आप यहाँ कैसे? बताया भी नहीं?"

हमे धीरे बोलने का इशारा करते हुये आरवी ने कहा "तुम चलेगा... आप ज्यादा फॉर्मल हो गया।"

“...और बताया भी नहीं से क्या मतलब? किसे बताना था और क्यों? इतने सालों बाद आज मिले हैं।” — उन्होंने कहा।

“ओह...सर्प्राइज़ !!!” — हमने कहा।

“पागल हो क्या? सर्प्राइज़ नहीं... सरप्राइज़ !!!”— बड़ी-बड़ी कजरारी आँखों से देखते हुये आरवी बोली।

“हाँ... वर्ई-वर्ई।”— हमने कहा।

“वर्ई-वर्ई नहीं... वो ही!!! होता है। आज भी तुम्हारी ‘वर्ई-वर्ई’ कहने की आदत नहीं बदली।”— मुस्कुराते हुये बड़े प्यार से वो बोली।

“विश्वास नहीं हो रहा... 15 साल बाद मिले हैं हम।”— आरवी ने आगे कहा।

“रियली...!!! सच में। मुझे तो लग रहा है जैसे कल की ही बात हो।”— उनके बड़े-बड़े झुमके देखते हुये हमने कहा।

साथ ही साथ मन में उनकी दस-पंद्रह साल पुरानी झलक फिर से कौंध रही थी। जीन्स, कुर्ती, बालियाँ और उसके ऊपर नज़रबंदू चढ़ा हुआ। एक हाथ में किताबें और दूसरी में कलम नाचती हुई। बीच-बीच में बालियां घुमाते हुये। क्लास में आगे की बेंच पर बैठ टीचर का सर खाती हुई। लेक्चर लम्बा खिंचते देख पीछे से दबी आवाज़ में आवाज़ें आती हुई। “चशमिश चुप।”

अब ये दबी आवाज़ें किसकी थी ये बताने की ज़रूरत तो है नहीं। जी यस, सही समझे... हम और हमारे वही लंगोटिया यार, श्री-श्री 1008 बाबा चरणदीप सिंह अरोरा, उर्फ़ चैंडी। सबसे पीछे की सीट पर जमे एक ही थाली के चट्टे-बट्टे। शायद इसके अलावा और कोई बात उनकी कॉलेज की हमे याद न हो।

मगर अब... माशाल्लाह!! क्या निखार आया है। जीन्स और कुर्ती तो अभी भी है, मगर उसके ऊपर राजस्थानी कोटी और नीचे पैरों में कोल्हापुरी चप्पलें क्या फ़ब रही है। काली घनेरी खुली-खुली जुल्फ़ें, कानो में झुमके और आँखों में चश्मे की जगह काजल। हाथों में खूबसूरत कंगन और कंगन के ऊपर हेयर बैंड। शायद बाल अभी-अभी खोले थे मोहतरमा ने। किताबों की जगह आईपैड ने ले रखी है और कलम नदारद है। इस लम्हे में खिड़की से छन्-छन् के आती किरणों ने उनके चेहरे को सुनहरा बना दिया था। खाली हाथ की उँगलियों से अपनी लटें, कानो के पीछे सजाई तो उनके झुमके ने हमसे आँखें चुराई। हमे भी कुछ ख्याल आया—

“जुल्फ़ों के साये में ऊँघते हुये, मिन्नते उँगलियों की टुकराते हुये

किलसते हुये बाहर आये तो, आईना देख के शर्माते हुये

उन्ही की तरह झुमका उनका, कुछ-कुछ नखरें दिखलाते हुये।”

“कागज़-कलम है क्या?” — हमने पूछा।

“क्या? कागज़ !! नहीं तो। क्यों?” — आरवी ने मना करते हुये पूछा।

“एक मिनट।”— उनको टोकते हुये हमने पास से गुज़रती हुई एयर होस्टेस से कागज़-कलम देने की दरख़्वास्त की।

“कुछ नहीं!! अरे, कुछ नहीं... बस कुछ ख्याल आया था, उसे ही लिखना था।”— हमने कहा।

“कैसा ख्याल...” — आरवी ने पूछा।

इतनी देर में एयर होस्टेस कागज़-कलम लेकर आ गई।

“थैंक्स” — बोलते हुये हमने कागज़ कलम लिया और अपने ख्यालों को त्वरित अभिव्यक्त किया। फिर कागज़ को मोड़ के अपनी ऊपर वाली जेब के हवाले किया।

“क्या लिखा...??”— आरवी ने हैरान नज़रों से देखते हुये हमसे पूछा।

“कुछ ख़ास नहीं।”— कह कर हम आरवी को देखने लगे।

“क्या हुआ... कहाँ खो गये? क्या सोच रहे हो?” — उन्होंने पूछा।

“तुम... तुम कितनी खूबसूरत हो गई हो।”— हमने कहा।

“क्या... क्या कहा?” — उन्होंने सुनते हुये भी अनसुना करते हुये हमसे पूछा।

वैसे भी तारीफ़ को अक्सर लड़कियां अनसुना ही कर देती हैं। वो इस लिये की आप उन्हें सुनाने के लिये फिर से बोलेंगे और बार-बार अपनी तारीफ़ कौन नहीं सुनना चाहता। मगर लड़कों में भी एक खासियत है। हिम्मती बोल सिर्फ़ पहली बार में ही फूटते हैं। वही त्वरित अभिव्यक्ति की तरह। दोबारा पूछने पर हिम्मत फुस्स और हम चौकन्ने हो कर बात ही पलट देते हैं। ठीक बिल्कुल वैसा ही, हमने आगे किया।

“मेरा मतलब... तुम कितना बदल गई हो” – अपने को सँभालते हुये हमने बात पलटी—

“काफी बदली—बदली लग रही हो। कॉलेज की पढ़ाकू इमेज से उलट।” – हमने कहा।

“थैंक्स” – थोड़ा शरमाते हुये उन्होंने कहा फिर मुस्कुरा दी।

“वैसे ये इमेज का क्या? जिसने जैसे देखा, गढ़ ली अपने दिमाग में वैसे ही इमेज। पर मैं तो वही आरवी हूँ... हाँ थोड़ा व्यावहारिक और हो गई हूँ।” – आरवी ने बोला

आरवी की इस सादगी ने हमारा मन मोह लिया था।

“उफ़फ़... खुदा ले—ले अपनी खुदाई और दे—दे मेरे हाथों में इसकी कलाई।” – हमारा मन, अपनी अलग ही ख्याल बुनने लगा था। हम सोच रहे थे कि “काश ये हवाई जहाज़ बस हवा में यूँ ही उड़ता रहे और हमारी गुप्तगू की परवाज़ चढ़ती रहे।”

“हेल्लो... कहाँ खो गये।” – चुटकी बजा हमारा हाथ पकड़ के कहते हुये उन्होंने हमें जैसे वापस ज़मीन पे लाया।

उनकी मुस्कान ने हमारे पहले से मुस्कुराते चेहरे पर भी मुस्कान की लकीर और चौड़ा दी। उधर हवाई जहाज़ आसमां में उड़ा और इधर हमारे मन ने अपनी परवाज़ भरी। बातों के दौर वो शुरू हुये जो हवाई जहाज़ के वापस उतरने तक न थमे। केरल पहुँचते—पहुँचते, पुराने दिन याद करते हुये हमने एक दूसरे को पसंद कर लिया था – शायद !!

दरअसल... हमने तो कर लिया था। “लव एट फर्स्ट साईट” यानी पहली नज़र का प्यार। अब आप कहेंगे की कॉलेज में अगर संग थे तो पहली नज़र कैसे। अरे, कॉलेज में देखता कौन था जनाब। और इस नये रंग रूप में पहली नज़र ही थी। हमें यकीन था की उन्हें भी होगा मगर उस वक़्त उनसे पूछना मुनासिब ना था। खैर, मोबाइल नंबर ले कर हमने अपनी अपनी राह पकड़ी।

किस्सा ख़त्म कर हमने चैंडी की तरफ़ देखा। उनकी बड़ी—बड़ी आँखें हमें ही घूर रही थी।

“हो गया !! बस... न खाया, न पिया और गिलास तोड़े बाराह आने।” अपना लैपटॉप बंद करते हुये उसने बोला –

“अब चलो क्लाइंट मीटिंग के लिये लेट हो गये तो “बुगाकू” ने क्लाइंट के सामने ही इज़्ज़त चाली ते छत्ती कर देनी है।”

“बुगाकू” – यानी के हमारे बॉस, जिसकी याद आते ही हम उठे और भागे कांफ्रेंस हॉल की तरफ। वैसे ये नाम अजीब लगा होगा आपको, मगर हमारे लिये नहीं था। बचपन में जितना “बुगाकू” नाम के विलेन ने नागराज और सुपर कमांडो ध्रुव को लोहे के चने चबवाये थे, उतने ही आज कल हमारा बॉस हमसे चबवा रहा था। इसलिये इससे उपयुक्त नाम और क्या रख सकते थे हम?

कॉन्फ्रेंस हाल में प्रेजेंटेशन खोल के बैठे ही थे की चैंडी ने हमें कोहनी मारी। कंप्यूटर स्क्रीन पे देखते हुये और हमने झुंझलाते हुये कहा “क्या है?”

चैंडी दांत पीसते हुये बोले “सामने देखो... चश्मिश।”

हमने चौंकते हुये सामने देखा और हमारी आँखें फटी की फटी ही रह गई। “बुगाकू” बॉस दाखिल हुये क्लाइंट के साथ और उन्होंने कहा—

“मिलिये हमारी क्लाइंट साइट मैनेजर, मिस आरती सिंघल से...”

बनारसिया गंगा

शिवम् सिंह
खण्डीय लेखाधिकारी-II



बनारस में ठहराव है पर शायद मुझमें नहीं। इसलिए बनारस से अक्सर जल्दी में ही मुलाकात हुई पर जितनी हुई उतनी जिन्दा बस गई। बनारस से होकर गुजर रहे थे। ट्रेन देरी से थी या फिर हम जल्दी; सो 'काशी के असी' से मुलाकात करने चल दिए। पीठ पर एक झोला लादे मलाईदार लस्सी और खस्ता कचौड़ी खाते इधर-उधर नजरें फिराते पैदल चलते चले गये। बनारस केवल एक शहर नहीं बल्कि यह अपने-आप में एक साँस लेता जीवन्त इतिहास है। भगवान शिव के त्रिशूल पर बसे बनारस में त्रिशूल के मध्य-शूल के ठीक ऊपर वाली जगह जानने वाला ही असली बनारसिया है।

कहते हैं कि गंगा के लगभग चार किलोमीटर के धनुष रूपी मोड़ के किनारे-किनारे कुल चौरासी घाट स्थित हैं। सँकरी गलियों ने मुझे असी घाट पर लाकर छोड़ दिया। एक तरफ 'सुबह-ए-बनारस' की बड़ी सी होर्डिंग है और सामने की ओर सीढ़ियाँ नदी में उतरती चली गई हैं। असी घाट से आगे बढ़ते ही तुलसी घाट है जहाँ खड़े हो निम्बू की चाय सुड़कते हुए गोस्वामी तुलसीदास के महाकाव्य श्रीरामचरितमानस का स्मरण हो आता है। शायद इन्हीं सीढ़ियों पर बैठकर उन्होंने कभी चन्दन घिसा होगा। जहाँ आज रूपल, आकाश के साथ पानी में पैर डाले बैठी है और दोनों विचारों में नदी की धारा के साथ कहीं दूर बह चले हैं।

प्रभु घाट के वृद्ध सूरज माँझी जब हमें चप्पू वाली नाव में गंगा के बीच ले जाते हैं तो सोचते हैं कि आज रात कुछ अच्छा पकाएंगे। उधर गंगा की अनन्त धारा के बीच हमारे कानों में वो गीत बजने लगता है— "अपना किनारा तो नदिया की धारा है..." वहाँ यह महसूस होता है कि आखिर किनारे पर जाकर करना क्या है; सचमुच अपना किनारा तो यही नदिया की धारा है।

सामने हरिश्चन्द्र घाट पर जो हरिश्चन्द्र न बिक सका उसने बिजलीघर में मुर्दे जला दिए। बाकियों ने अपनी हैसियत से लकड़ियाँ खरीदी हैं। कोई चन्दन में तो कोई जंगली लकड़ी में जल रहा है पर अन्त में सब एक ही राख बन रहे हैं। इसी मणिकर्णिका घाट पर ही तो पार्वती के कानों की मणि खोई थी। शायद गंगा ने अभी तक सँभाल कर रखी हो; तभी तो यहाँ स्वयं शिव प्रत्येक मुर्दे के कान में अन्तिम मंत्र पढ़ते हैं। कहते हैं इस घाट की आग आज तक न बुझी। गर्मी, जाड़ा, बरसात कुछ भी हो मुर्दे आते ही रहते हैं। अभी भी सात मुर्दे जलने के लिए इन्तजार में हैं। यहाँ एक लाश की आग से ही दूसरी लाश में आग लगा दी जाती है।

मणिकर्णिका घाट पर चिता में अग्नि धधक रही है तो सामने दशाश्वमेध घाट पर गंगा आरती की अग्नि प्रज्ज्वलित है। एक तरफ मृत्यु का घोर अट्टहास है तो दूसरी ओर जीवन्त संस्कृत मंत्रोच्चार से वातावरण गुंजायमान हो रहा है। इस विहंगम दृश्य को देखने के लिए शायद माँ गंगा ने भी अपनी धारा धीमी कर ली है। हो सकता है कि यही बिन्दु धनुष का सबसे बाहरी वाला बिन्दु हो। जो भी हो सूरज माँझी ने नाव मोड़ ली है असी की ओर। एक बार फिर से गंगा की असीम धारा चाँद की दुधिया रोशनी में चमक रही है। कहीं दूर से रह-रह कर आती पवन का स्पर्श अत्यन्त सुखदायक है। सूरज माँझी की तमन्ना है हमें उस पार ले जाने की पर अपना किनारा तो नदिया की धारा है।

मानस घाट की सीढ़ियों पर बैठ अंकित गंगा में रुक-रुक कर कंकड़ फेंक रहा है। ये कंकड़ वो बी०एच०यू० हॉस्टल से नहीं लाया है। ये उसे जिन्दगी ने थमाए हैं। कंकड़ नहीं, ये प्रश्न हैं शायद। गंगा जवाब नहीं देती पर सब समाहित कर लेती है। सब अंकित करती है

और बहती रहती है। यही उत्तर है शायद।

चौत घाट पर शायद किसी ने तर्पण किया है पूर्वजों का या वर्षों पुरानी कोई परम्परा निभाई है या फिर माँगी है कोई मुराद गंगा माँ से... जो आटे का दीपक जला, गंगा में बहाया है। रूपल जा चुकी है और आकाश असी की निम्बू चाय की चुस्की लेते हुए दिनेश को सपना से बात करने के लिए प्रेरित किये जा रहा है। इधर सूरज माँझी गंगा किनारे जन्मे, इन्हीं घाटों पर दौड़कर बड़े हुए और इसी पर मर जाने की तमन्ना लिए नाव खेये जा रहे हैं। बीवी-बेटे सभी पक्के घरों में जा बस गए पर सूरज माँझी इन्हीं घाटों पर अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे हैं। कोई मर के यहाँ आया है, कोई मरने के लिए यहाँ आया है और कोई इनके बीच यह सब कुछ देखने यहाँ आया है।

(बादल, पर्वत और जुगनू में संकलित)



नज्म

सुशील कुमार देवली
वरिष्ठ लेखाधिकारी



बातों के.....
एक जोड़ी कान,
एक जोड़ी आँख,
एक नाक, एक मुँह के
साथ-साथ
एक चटोरी जीभ भी होती है.....
खुशी का बायस भी होती हैं बातें
और गालिबन झगड़े का बायस भी....
किसी के भी कान भर देना....
किसी भी बात को सूँघ लेना...
किसी के भी आँखों पर अपनी
बातों का परदा डाल कर
चली आती हैं/जाती हैं....
बातें.....



ऑडिट दिवस वर्ष-2023 की झलकियाँ



उत्तराखण्ड के मा0 राज्यपाल ले0 जन0 गुरमीत सिंह, प्रमुख सचिव, अपर सचिव, पुलिस महानिदेशक, वन संरक्षक महानिदेशक एवं महालेखाकार भवन के गणमान्य अधिकारी



ऑडिट दिवस के दौरान कार्यालय की महिला कर्मियों द्वारा बनाई गई रंगोली



ऑडिट सप्ताह के दौरान आयोजित सेमिनार में मंचासीन अतिविशिष्ट अतिथिगण



समूह-नृत्य प्रस्तुति



एकल-नृत्य



सेमिनार में मंच संचालन करते हुए डॉ० दिनेश शर्मा, स०ले०अ०



सरस्वती वन्दना प्रस्तुत करती महिला कार्मिक

स्वतन्त्रता दिवस



महालेखाकार महोदय राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए



कथक नृत्य प्रस्तुति—कु० अंशिका रावत



बाल कलाकार प्रस्तुति देते हुए

x.kr=fno | 2024



श्री राजीव कुमार सिंह, महालेखाकार (लेखा एवं हक0)
राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की फोटो पर माल्यार्पण करते हुए



श्री प्रवीन्द्र यादव, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
ध्वजारोहण करते हुए

foekpu



कार्यालय महालेखाकार (लेखा0 एवं हक0) की वार्षिक पत्रिका "हिमज्योति" के तेरहवें अंक का विमोचन करते हुए
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), महालेखाकार (लेखा0 एवं हक0) एवं अन्य अधिकारीगण

हिंदी अनुभाग की गतिविधियां

तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन



हिंदी पखवाड़े का शुभारम्भ दिनांक 14.09.2023 को पुणे, महाराष्ट्र में हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के आयोजन के साथ किया गया, जिसमें कार्यालय से श्रीमती पूनम शर्मा, हिंदी अधिकारी व डॉ० दिनेश शर्मा, स०ले०अ० ने प्रतिभाग किया।

हिंदी पखवाड़ा-2023

महालेखाकार भवन में भी हिंदी पखवाड़े का आयोजन संयुक्त रूप से कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), कार्यालय निदेशक लेखापरीक्षा (वायुसेना) एवं कार्यालय उपनिदेशक (वाणिज्यिक लेखापरीक्षा) द्वारा किया गया। पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे- निबंध, प्रश्नोत्तरी (क्विज), अनुवाद, हिंदी टंकण आदि का भी आयोजन किया गया। पखवाड़े का समापन दिनांक 29.09.2023 को कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) की वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'प्रयास' एवं कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'हिमज्योति' के विमोचन तथा पारितोषिक वितरण के साथ हुआ।



उद्घाटन के अवसर पर कार्यालय की महिला कर्मि सरस्वती वंदना प्रस्तुत करते हुए



अनुवाद प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते कर्मचारीगण



सुलेख प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते कर्मचारीगण



समापन समारोह के दौरान महालेखाकार मार्गदर्शन प्रदान करते हुए



हिंदी पखवाड़े के दौरान कार्यालय की महिला कर्मियों द्वारा बनाई गई रंगोलियाँ

निबंध प्रतियोगिता

प्रथम	—	अंजु, लेखाकार
द्वितीय	—	अंशुल शुक्ला, लेखाकार
तृतीय	—	शिवम् लिहौरी, लेखाकार

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

प्रथम	—	अश्विनी यादव, वरिष्ठ लेखाकार मधुमिता मुखर्जी, वरिष्ठ लेखाकार शिवम् लिहौरी, लेखाकार
द्वितीय	—	लक्ष्मी लसपाल, सहायक पर्यवेक्षक अंशुल शुक्ला, लेखाकार राजन चौधरी, डी०ई०ओ०
तृतीय	—	रेखा कुजूर, सहायक पर्यवेक्षक रुद्र प्रकाश, लेखाकार अरविन्द रावत, लेखाकार

रंगोली प्रतियोगिता

प्रथम	—	लक्ष्मी लसपाल, सहायक पर्यवेक्षक शिवांगी, वरिष्ठ लेखाकार अंजु, लेखाकार
द्वितीय	—	पूर्णमा चटर्जी, पर्यवेक्षक भावना आर्या, वरिष्ठ लेखाकार राधा राणा, लेखाकार
तृतीय	—	शालू जाटव, वरिष्ठ लेखाकार मधुमिता, वरिष्ठ लेखाकार भावना यादव, लेखाकार

सुलेख प्रतियोगिता (बहुकार्यकर्मी)

प्रथम	—	जयपाल भंडारी, बाह्य स्रोतकर्मी
द्वितीय	—	मोहित पंवार, बाह्य स्रोतकर्मी
तृतीय	—	हेमवन्त कुमार, बाह्य स्रोतकर्मी

अनुवाद प्रतियोगिता

प्रथम	—	अश्विनी यादव, वरिष्ठ लेखाकार
द्वितीय	—	अंशुल शुक्ला, लेखाकार
तृतीय	—	अरविन्द रावत, लेखाकार

टंकण प्रतियोगिता

प्रथम	—	बृजेश कुमार, स०ले०अ०
द्वितीय	—	चौधरी कौशतव, डी०ई०ओ०
तृतीय	—	प्रशांत कुमार, स०ले०अ०

पुरस्कार वितरण



श्री शिवम लिहौरी, लेखाकार



श्री अश्वनी यादव, वरि० लेखाकार



सुश्री लक्ष्मी लसपाल, सहा० पर्यवेक्षक



श्री जितेन्द्र कुमार निराला, स०ले०अ०



सुश्री सुभिता पाण्डेय, सहा० पर्यवेक्षक



श्री संजीव कुमार, वरि० लेखाधिकारी

हिंदी कार्यशाला



प्रथम त्रैमास (अप्रैल-जून 2024) में आयोजित एक-दिवसीय कार्यशाला में श्री महिमानंद भट्ट व्याख्यान देते हुए



द्वितीय त्रैमास (जुलाई-सितम्बर 2024) में आयोजित एक-दिवसीय कार्यशाला में श्री शंकर शर्मा प्रशिक्षण देते हुए



हिंदी प्रकोष्ठ परिवार

कल्याण अनुभाग की गतिविधियाँ



श्री संजीव जखमोला, सहायक पर्यवेक्षक ने दिनांक 27.02.2024 से 09.03.2024 तक मुंबई में आयोजित "18th Dy Patil T-20 All India Cricket Tournament" प्रतियोगिता में भाग लिया



श्री शुभम नेगी, लेखाकार ने दिनांक 25.06.2024 से 05.07.2024 तक हिमाचल प्रदेश में आयोजित "Syed Mustaq Ali Trophy Selection Matches 2024-25" प्रतियोगिता में भाग लिया



श्री सत्री राणा, सहायक पर्यवेक्षक ने दिनांक 10.06.2024 से 28.06.2024 तक देहरादून में आयोजित "Cooch Behar & Vinoo Mankad Trophy 2024-25" ट्रेनिंग कैप में भाग लिया



श्री अभिषेक अग्रवाल, सहायक लेखाधिकारी तथा श्रीमती शिखा खंडूरी, सहायक पर्यवेक्षक ने दिनांक 16.03.2024 से 23.03.2024 तक पंचकुला, हरियाणा में आयोजित "IA&AD players 46th Indian Masters National Badminton Championship 2023-24" प्रतियोगिता में भाग लिया



दिनांक 15.12.2023 से 21.12.2023 तक नई दिल्ली में आयोजित
“All India Civil Services Football Tournament 2023 – 24
 प्रतियोगिता में श्री विजय कुमार, वरिष्ठ लेखाकार, शम्भू जुयाल, वरिष्ठ लेखाकार एवं मो० आमिर खान, लेखाकार ने प्रतिभाग किया



श्री वैभव भट्ट, लेखाकार ने दिनांक 10.06.2024 से 28.06.2024 तक नैनीताल में आयोजित
“Senior Men's Training Camp 2024-25” प्रतियोगिता में भाग लिया गया।

मनोरंजन क्लब की गतिविधियाँ



लेखा मनोरंजन क्लब द्वारा दिनांक 09.10.2023 से 10.10.2023 तक शतरंज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया



लेखा मनोरंजन क्लब द्वारा दिनांक 30.10.2023 से 31.10.2023 तक कैरम प्रतियोगिता का आयोजन किया गया



लेखा मनोरंजन क्लब द्वारा दिनांक 30.10.2023 से 31.10.2023 तक कैरम प्रतियोगिता का आयोजन किया गया



लेखा मनोरंजन क्लब द्वारा माह फरवरी 2024 में आयोजित महिला प्रतियोगिता प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते हुए



माह जनवरी 2024 में कार्यालय स्तर पर आयोजित क्रिकेट प्रतियोगिता में विजयी टीम



लेखा मनोरंजन क्लब द्वारा दिनांक 02.12.2023 से 03.12.2023 तक बैडमिंटन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया



योग दिवस



दिनांक 21.06.2024 को योग दिवस के उपलक्ष्य पर महालेखाकार भवन में स्थित चारों कार्यालयों प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तराखण्ड, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), कार्यालय निदेशक रक्षा लेखा परीक्षा(वायु सेना), कार्यालय उप निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा के अधिकारी एवं कर्मचारीगण योगाभ्यास करते हुए



योगाभ्यास के पश्चात अधिकारी एवं कर्मचारीगण

सेवानिवृत्ति



श्रीमती पूर्णिमा चटर्जी, पर्यवेक्षक, सेवानिवृत्ति 31.01.2024



श्री पंकज कुमार रावत, पर्यवेक्षक, सेवानिवृत्ति 29.02.2024



श्री सरदार सिंह तोमर, पर्यवेक्षक, सेवानिवृत्ति 29.02.2024



श्री रविन्द्र कृष्ण भट्ट, वरिष्ठ लेखाधिकारी, सेवानिवृत्ति 31.03.2024



श्री अभिनन्दन कुमार, सहाय पर्यवेक्षक, सेवानिवृत्ति 31.05.2024



श्रीमती इन्दिरा कुमारी, वरिष्ठ लेखाकार, सेवानिवृत्ति 30.06.2024

बाल कलाकार



अथर्व सिंह पुत्र श्री शिवम् लिहौरी, लेखाकार



सान्वी पुत्री श्री शिवम् लिहौरी, लेखाकार



नव्या त्रिपाठी पुत्री श्री नवीन त्रिपाठी, सहायक लेखाधिकारी



प्रगति राणा पुत्री श्रीमती राधा राणा, वरिष्ठ लेखाकार

वर्ष 2024 में हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता



चित्रकला प्रतियोगिता में विजयी बालक/बालिकाओं को पारितोषिक प्रदान करते हुए महालेखाकार महोदय

आयु वर्ग 5 से 10 वर्ष



प्रथम पुरस्कार- अम्बिका, पुत्री श्री विक्रान्त कुमार, सहायक लेखाधिकारी

आयु वर्ग 11 से 14 वर्ष



प्रथम पुरस्कार- आयुष शर्मा, पुत्र डॉ. दिनेश शर्मा, सहायक लेखाधिकारी



द्वितीय पुरस्कार- विहान पाराशर, पुत्र सुश्री पूनम शर्मा, हिंदी अधिकारी



द्वितीय पुरस्कार- सत्यम कुमार, पुत्र श्री शनि कुमार. डी.ई.ओ



तृतीय पुरस्कार- मनस्वी बासल, पुत्री श्री बृजेश कुमार, सहायक लेखाधिकारी



तृतीय पुरस्कार- शगुन अग्रवाल, पुत्री श्री अभिषेक अग्रवाल, सहायक लेखाधिकारी





SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून